मसीही आह्वान

जुलाई – 2017 | मासिक पत्रिका | अंक – 7

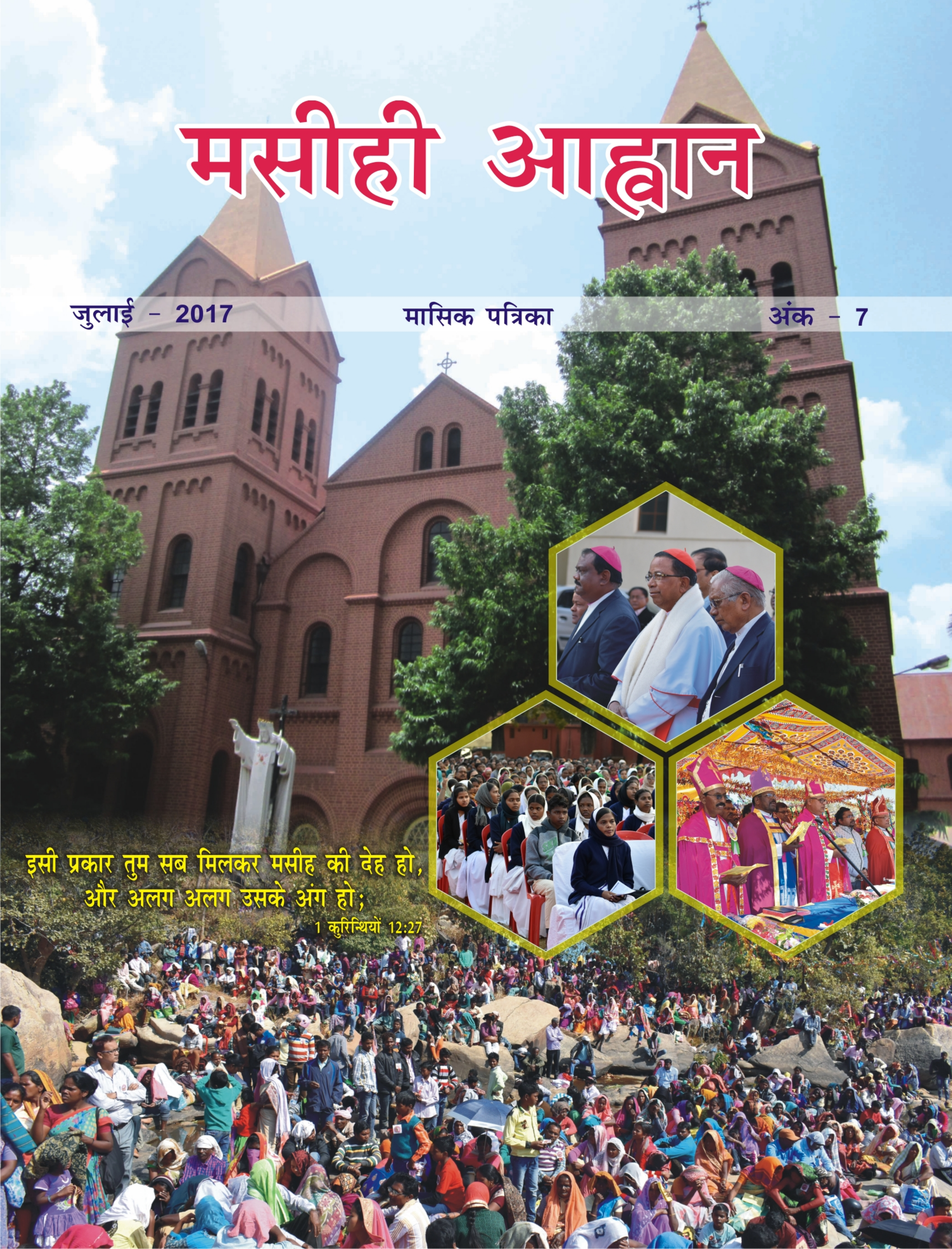

इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो,
और अलग अलग उसके अंग हो;
1 कुरिन्थियों 12:27

दैनिक भोजन आत्मिकता में आगे बढ़ने के लिए दैनिक बाइबल पाठ और प्रार्थना

एक प्रति ₹ 30

डाक खर्च अतिरिक्त

यदि आप अपने तथा अपने प्रियजनों के लिए जुलाई, अगस्त, सितम्बर का **दैनिक भोजन** मंगाना चाहते हैं तो जल्द से जल्द हमें हमारे फोन नम्बर अथवा ई-मेल द्वारा सूचित करें।

दैनिक भोजन मंगाने का पता

मसीही आह्वान
गुड बुक्स बिल्डिंग, दूसरी मंजिल, मेन रोड,
रांची (झारखण्ड)
फोन - 0651-2331394, 2330231
ई-मेल : masihiahwan@gmail.com

A BOON FOR BOOK LOVERS

A Good Book is a Good Friend - it

- ✓ Challenges you
- ✓ Entertains you
- ✓ Widens your horizons
- ✓ Enlighten your Life

Get into the wonderful world of

GOOD BOOKS
Trust Association Pvt. Ltd.

MAIN ROAD, RANCHI (JHARKHAND)
Ph. : 0651-2330296
Email : goodbooks.06512330296@gmail.com

DEALS IN :

RELIGIOUS BOOKS, BIBLES, RELIGIOUS CDS, GENERAL & CHILDEREN REFERENCE BOOKS, MAGAZINES, GREETING CARDS, GIFT ITEMS, STATIONARY, TOYS, EDUCATIONAL AND GAME CDS & MANY MORE ITEMS.

मसीही आह्वान

पारिवारिक मसीही पत्रिका

जुलाई - 2017 वर्ष - 7 अंक - 7

इस अंक में....

सम्पादकीय	2
क्या आप आराधना करती कलीसिया हैं?	3
ख्रीस्त गिरजा घर	6
दुनिया किसके कब्जे में?	8
सेवा में बढ़ते कदम (साक्षात्कार)	10
नामुमकिन नहीं	12
प्रार्थना के कुछ तत्व	15
हार	18
मूसा का चुनाव	20
दाख की बारी का गीत	23
अंचल से	26
विज्ञान जगत	27
सेहत	28
चर्चा परिचर्चा	29
बाइबल प्रश्न मंच	30
सर्वशुद्ध हल	31
रिपोर्ट	32

सम्पादक :
नीलम सोनाली तिर्की

•

सहायक सम्पादक :
अमिता बाखला

•

सम्पादन समिति :
श्री शेत सोनवानी, श्री शिशिर टुडू
रेव्ह. टी. एस. सी. हंस, रेव्ह. डॉ. ए. के. लामा
श्री सुरेन्द्र किस्कू

•

कार्यकारिणी समिति :
श्री विद्युत मिंज, श्री सुभ्रांशु रंजन दीप

•

प्रबंधक मंडल :

श्री शेत सोनवानी — श्री शिशिर टुडू
रेव्ह. जुलियस अशोक शॉ — भाई आर. स्टीफन पॉल
रेव्ह. टी. एस. सी. हंस — श्री वाल्टर भेंगरा
रेव्ह. डॉ. आर. सी. यादव — इंजी. बाबुल वर्मा
रेव्ह. डॉ. सी. एस. आर. गीर — श्री एलेन डायस
रेव्ह. डॉ. अनिल मार्टिन — श्रीमती शीला लकड़ा
डॉ. शैलेन्द्र जोसेफ

आवरण पृष्ठ सज्जा : श्री सुभ्रांशु रंजन दीप

सदस्यता सहायता राशि

एक प्रति	:	₹ **20**
वार्षिक सदस्यता	:	₹ **200**
6 वर्षों के लिए	:	₹ **1000**

नोट : आप सभी पाठकों एवं शुभचिंतकों से अनुरोध है कि यदि आप नवीनीकरण, विज्ञापन, दान या उपहार इत्यादि का भुगतान डी.डी. द्वारा करना चाहते हैं तो कृपया इस नाम में (IN FAVOUR OF) करें:-

GOOD BOOKS TRUST ASS. PVT. LTD. MASIHI AHWAN

(कृपया चेक द्वारा भुगतान न करें।)

व्यवस्थापकीय कार्यालय

मसीही आह्वान

गुड बुक्स बिल्डिंग, दूसरी मंजिल,
मेन रोड, राँची - 834 001 (झारखण्ड)
फोन : 0651- 2331394 • E-mail : masihiahwan@gmail.com

Rates of Advertisement in MASIHI AHWAN

LAST COVER PAGE	:	Full Page ₹ 2000	Half Page ₹ 1000	Qtr. Page ₹ 500
INSIDE COVER PAGE	:	Full Page ₹ 2000	Half Page ₹ 1000	Qtr. Page ₹ 500
INSIDE PAGE	:	Full Page ₹ 1000	Half Page ₹ 500	Qtr. Page ₹ 300

संपादकीय घोषणा : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में प्रस्तुत विचारों के लिए लेखक/लेखिका व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार हैं। उनके विचार मसीही आह्वान कार्यालय का आवश्यक रूप से प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। इस पत्रिका के सभी कर्मचारी अवैतनिक तौर पर सेवा नियुक्त हैं।

सम्पादकीय....

कलीसिया : परमेश्वर की आशिष

सम्पादक

हमारा आदर्श सिर्फ और सिर्फ प्रभु यीशु ख्रीस्त हैं, हमें उन्हीं के जीवन का अनुकरण करना है तभी हम अपने जीवन में सही चुनाव करके आगे बढ़ सकते हैं।

मसीह में प्रिय पाठको, आप सबों को सप्रेम मसीही नमस्कार।

पिछले लगभग एक डेढ़ महीने में हम सब ने भीषण गर्मी का सामना किया। अत्यधिक तापमान लगातार हमारे शरीर के पानी को सोखता रहा, हम पर प्रहार करता रहा। किन्तु अनुग्रहकारी परमेश्वर पिता का धन्यवाद हो, जो समय पर वर्षा भेज कर हमारे शारीरिक तपन को मिटाने के साथ साथ सूखी भूमि पर भी अपनी कृपा को उण्डेलते हैं। सचमुच हमारे परमेश्वर सृष्टि के अद्‌भुत रचियता हैं, इसमें उन्होंने अलग-अलग मौसम समयानुसार निर्धारित किए हैं। जुलाई का यह महीना बारिश का महीना है और अब हम देख रहे हैं कि चारों ओर हरियाली छा गई है। पेड़ पौधों के झुलसे पत्ते गिर चुके और उनकी जगह नई पत्तियों ने ले लिया है। परमेश्वर की इन आशिषों को देख कर कितना अच्छा लगता है!

मुझे याद आ रहे हैं बचपन के वे दिन जब मैं अपनी बड़ी बहनों के साथ स्कूल से वापस घर लौटती और रास्ते में बारिश शुरू हो जाती, बादल गरजते, बिजली चमकती और हमारे पास छाता या बरसाती (Raincoat) न होता! और मैं उछल कूद करती हुई गाती..."जब जब देखूं ये आकाश, बादल बिजली और बरसात, क्या क्या बनाए तेरे हाथ...इसलिए तेरे गुण गाता जाऊंगा, महिमा के वचन सुनाता जाऊंगा, गीत तेरे नित गाता जाऊंगा....यह गीत जिसे मैं ने VBS में सीखा था, शायद उस वक्त मेरे डर को भगाते थे और हम सब सुरक्षित घर पहुंच जाते थे। अब मैं सोचती हूं कि कभी कभी अनजाने और बचपन के अल्हड़पन में की गई परमेश्वर की स्तुति भी परमेश्वर को ग्रहणयोग्य हो जाती है। सचमुच हमारे परमेश्वर अत्यंत महान और प्रेमी परमेश्वर हैं और हर समय, हर परिस्थिति में हम मनुष्यों पर अपना अनुग्रह बनाए रखते हैं।

प्रियो, परमेश्वर ने हमारी रचना विशेष उद्देश्य से की है। अतः इस अंक में हम उन्हें ढूंढ़ने का प्रयास करेंगे। विशेष करके जब हम परमेश्वर के उद्धार की योजना में शामिल किए जाते हैं और प्रभु यीशु के क्रूस दुख, मृत्यु और पुनरुत्थान और उनके द्वितीय आगमन पर विश्वास करते हैं तो हमारे इसी विश्वास के कारण हम ख्रीस्त की कलीसिया के रूप में निर्मित होते जाते हैं। प्रेरितों के काम में हम कलीसियाई जीवन के स्वरूप को देख और समझ सकते हैं यद्यपि यह उस काल के परिप्रेक्ष्य में है। किन्तु परमेश्वर को आदर सम्मान देने और उनकी आज्ञाओं का पालन करते हुए, उनकी इच्छानुसार चलने की बात तो हर काल और हर युग के लिए एक समान ही है। इस नाशवान संसार में ख्रीस्त की कलीसिया एक जीवित गवाह है जो लोगों को परमेश्वर के अनन्त राज्य की आशा प्रदान करती है।

इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम अपने जीवन के मूल्य को समझें और परमेश्वर के उद्देश्य को जो मेरे और आपके लिए भिन्न भिन्न प्रकार से है, समझने का प्रयास करें। हमारा आदर्श सिर्फ और सिर्फ प्रभु यीशु ख्रीस्त हैं, हमें उन्हीं के जीवन का अनुकरण करना है तभी हम अपने जीवन में सही चुनाव करके आगे बढ़ सकते हैं।

जी हां प्रियो, परिस्थितियां चाहे कितनी भी विपरीत क्यों न हों, हमें अपने आत्मिक और कलीसियाई जीवन को सूखने नहीं देना है। स्मरण रहे, कलीसिया परमेश्वर की अत्यंत महान और अद्‌भुत आशिष है, इसे समझने के लिए अवश्य पढ़ें 1 कुरिन्थि. अध्याय 12 और 13।

परमेश्वर की आशिष हम सब पर बनी रहे।

प्रभु में आपकी बहन
नीलम सोनाली तिर्की

आत्मिक भोजन

1 जुलाई **विभाजन** **1 कुरिन्थियों 1:10-13**

''एकता ही बल है'' शायद इस प्रसिद्ध कहावत से हम सभी सहमत होंगे। लेकिन वर्तमान में संसार के हर क्षेत्र में विभाजन, फूट, लड़ाई और झगड़े देखने को मिलते हैं। यह कितनी कष्टप्रद बात है लेकिन आज यीशु के अनुयायी भी तो फूट, विभाजन, दलबंदी से मुक्त नहीं। प्रभु तो स्वयं ही कहते हैं जैसे ''हम एक हैं, वैसे वे भी एक हों।''

प्रार्थना - प्रभु, आपकी इच्छानुसार आपसी मेल-मिलाप एवं एकता के बन्धन में हम बंधे रहें।

क्या आप आराधना करती कलीसिया हैं?

शब्द 'कलीसिया' तब तक पूर्ण रीति से परिभाषित या अर्थपूर्ण नहीं होता जब तक, विश्वासी या विश्वासियों का समूह वास्तविक तौर पर अपनी बुलाहट को पूरा न करें। अपनी बुलाहट को एक मसीही व्यक्ति विभिन्न तरीकों से पूरी कर सकता या सकती है, उनमें से एक है, आराधना। **वेस्टमिन्सटर लघु प्रश्नोत्तरी** प्रश्न 1, यह प्रश्न करता है कि मनुष्य का मुख्य उद्देश्य क्या है? मनुष्य का मुख्य उद्देश्य है, परमेश्वर की महिमा करना और सदा के लिए उसका आनंद उठाना।

अगर कलीसिया आराधना नहीं कर रही है, तो वह कलीसिया एक मृत कलीसिया से अधिक और कुछ नहीं, क्योंकि परमेश्वर में हमारा यही मुख्य रूप से उद्देश्य है।

आराधना परमेश्वर की महिमा करना और उसका आनंद उठाना है। हम परमेश्वर की आराधना इसलिए करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने हमें सृजा है और परमेश्वर चाहते हैं कि हम उसके साथ सहभागिता करें। आराधना में परमेश्वर के लोग एक साथ या व्यक्तिगत तौर पर आते हैं ताकि परमेश्वर के नाम को महिमा दे सकें। सार्वजनिक आराधना सामूहिक, निजी और पारिवारिक आराधना से अलग है। आराधना एक पवित्र गतिविधि है और जीवन की गतिविधियों के बाकी हिस्सों से अलग है। परमेश्वर ने मानव जाति को एक पवित्र समय दिया है: सप्ताह का पहला दिन आराधना और शारीरिक आराम के लिए। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आराधना एक साप्ताहिक कार्य है, बल्कि इसमें हमारा पूरा जीवन शामिल है।

बाइबल हमें आराधना हेतु कोई औपचारिक परिभाषा नहीं देती है।

आराधना मानव की जरूरत है और नैतिक दायित्व भी जिससे बचा नहीं जा सकता है। यह कर्तव्य और जरूरत मानव स्वभाव में संरचित है। यह जानवरों की जरूरत या दायित्व या उसके स्वभाव का हिस्सा नहीं बल्कि मनुष्य को इसकी जरूरत है और यह उनमें निर्मित कर्तव्य है।

आराधना परमेश्वर के महान् आशीषों की प्रतिक्रिया है।

हम परमेश्वर के निवास के सबसे महत्वपूर्ण स्थान हैं। हम पवित्र आत्मा का मंदिर हैं और यही वजह है कि परमेश्वर हमें आत्मा और सच्चाई के साथ आराधना करने के लिए मांग करते हैं। यदि हम आराधना नहीं करते हैं तो हमारा जीवन सूखा और मृत हो जाता है। यह समय का अपव्यय नहीं, बल्कि सद्उपयोग है। परमेश्वर की आराधना करने से अधिक उत्तम (मूल्यवान) कुछ भी नहीं है।

जब तक हम परमेश्वर की आराधना न करें तब तक इस दुनिया की अंधेरी शक्तियों के खिलाफ हम युद्ध नहीं कर सकते हैं, जो सब बातों से ऊपर है, ''क्योंकि हमारा संघर्ष मांस और रक्त के खिलाफ नहीं है, लेकिन इस संसार के शासकों, अधिकारियों के खिलाफ, इस अंधेरी दुनिया की आध्यात्मिक शक्तियों के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से जो आकाश में हैं'' (इफिसियों 6:12)।

हमें केवल परमेश्वर की महानता का रविवार के दिन ही

आत्मिक भोजन

2 जुलाई **कर्जदार** **रोमियों 13:8**

संसार में कर्ज या ऋण लेना या देना दोनों ही बातें होती हैं। लेकिन बाइबल एवं नैतिकता को ध्यान में रखते हुए यदि हमने कर्ज लिया है तो उसे ईमानदारी के साथ लौटा भी देना चाहिये। निर्धारित समय पर कर्ज नहीं लौटाने के कारण हम दूसरों की नजर में संपत्ति या पैसे के चोर बनते हैं। दुष्ट कर्ज लेता है और उसे वापस नहीं करता (भजन संहिता 37:21)। अंत में संत पौलुस यह कहता है कि प्रेम एक ऐसी चीज है जिसे हम लगातार उधार ले सकते हैं। हम परमेश्वर और अपने साथी भाई बहनों के प्रेम के लिये उनके कर्जदार हैं।
प्रार्थना – हे प्रभु, प्रेम को छोड़ और किसी बात के लिये किसी का कर्जदार ना रहूं।

प्रतिउत्तर नहीं देना है, क्योंकि आराधना सिर्फ एक साप्ताहिक कार्य नहीं, बल्कि हफ्ते भर परमेश्वर की आराधना करना अनिवार्य है। आराधना हमें परमेश्वर पर निर्भर रहना और परमेश्वर के अनुग्रह की ओर आभार व्यक्त करने में सहायक है। सामूहिक आराधना महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति है इस प्रकार की आराधना के लिए देखें यूहन्ना 4:21-24, 1 कुरिन्थियों 10:31।

आराधना हमारे मन की समग्रता, भावनायें, इच्छा, कार्य को व्यक्त करती है (भजन 135:5, 100:3,4, 22:22; 98:4, इब्रानियों 13:15,16)। वर्तमान कलीसियाओं को आराधना का महत्व और जीवन शैली में आराधना को बढ़ावा देना सिखाना होगा।

"इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर आग्रह करता हूं कि अपने शरीर को एक जीवित और पवित्र बलिदान, जो परमेश्वर को स्वीकार्य हो, करके चढ़ाओ यही तुम्हारी आध्यात्मिक सेवा है" (रोमियों 12:1)।

याद रखें की आराधना मसीह (हमारा महायाजक) के माध्यम से स्वीकार होती है : आराधना वह है जो यीशु मसीह में और उसके माध्यम से परमेश्वर को स्वीकार होती है। मसीह हमारी आराधना का अगुवा है। हम परमेश्वर की उपस्थिति में यीशु मसीह के माध्यम से और उसकी पवित्रता से आते हैं और वह हमारी मामूली आराधना बटोर कर अपनी सही पेशकश चढ़ाते हैं (इब्रानियों 8:1,2; 10:19-22)।

हमें हमारी आराधना में उत्कृष्टता के लिए प्रयास करना है, लेकिन तकनीकी प्रवीणता या रचनात्मक योग्यता न देखें (जो स्वंय में मायने नहीं रखता), यह सोच कर कि परमेश्वर का पक्ष या स्वीकृति हासिल होगी, जो आम तौर पर जवानों की सभाओं में देखा जा सकता है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम आराधना में क्या-क्या अद्भुत बातें कर रहे हैं। अंततः हमारी आराधना परमेश्वर को स्वीकार मसीह के माध्यम से है, न कि हमने कितने माइक्रोफोन, साउंड बॉक्स या प्रकाश लगाया है।

आराधना करना एक सुझाव नहीं बल्कि परमेश्वर के सभी लोगों की जिम्मेदारी है। आराधना एक गतिविधि है जिसमें हम खुद शामिल होते हैं, हम दर्शक नहीं हैं। सभी विश्वासियों का एक महत्वपूर्ण याजकीय अभिव्यक्ति यह है कि हर व्यक्ति के पास कलीसिया में सामूहिक आराधना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर है (भजन 107:32) उन्हें लोगों के बीच में पदोन्नत और उसकी प्रशंसा करनी चाहिए (रोमियों 15:5,6)। कलीसिया को चाहिए कि पूरे दिल से और हर संभव तरीके से आराधना में भाग लें।

नया नियम (पुराना नियम के विपरीत) गैर-आदेशात्मक उल्लेखनीय है। जब यह सामूहिक आराधना के आकार और सेवाओं के तरीकों को देखती है। हम केवल कल्पना या अनुमान लगा सकते हैं कि परमेश्वर ने आराधना के क्षेत्र में काफी स्वतंत्रता की अनुमति दी है। दोनों नियम दूसरी ओर बहुत स्पष्ट हैं कि परमेश्वर आराधना में दिल और तरीकों को कितनी गंभीरता से लेते हैं (2 इतिहास 30:18-20, मरकुस 12:33)।

अब हमें यह भी मालूम होना चाहिए कि वचन में आराधना के नियामक सिद्धांत दिए गए हैं, जिसका उपयोग कर हमें आराधना करनी है।

नियामक सिद्धांत हमें यह समझने के लिए बेहतर सहायता करते हैं कि हमारी आराधना किन सिद्धांतों पर विनियमित होनी चाहिए और इन नियमों को हम परमेश्वर के वचन में पाते हैं।

जिस तरह परमेश्वर हमारे पूरे जीवन को अपने वचन के अनुसार चलाता है वैसे ही हमारी आराधना को भी। यही हमारे जीवन का एक मात्र स्तर है जिस पर हमारा जीवन चलता है। हम उन बातों के माध्यम से ही आराधना करते हैं जो हमें वचन में आज्ञा दी गई है। हालांकि कुछ कलीसियाएं हैं, जो आराधना में उन सभी बातों का प्रयोग करती हैं, जब तक उस बात की वचन में मनाही न हो।

हमें याद रखना चाहिए कि आराधना प्रथम खुद के लिए नहीं, वरन् परमेश्वर के लिए है। इसलिए हमें इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि परमेश्वर को क्या भाता है। हमारी कल्पनाएं गलत हो सकती है, लेकिन परमेश्वर के वचन में जो निर्धारित किया गया है, वो गलत नहीं हो सकता। बाइबल में कुछ लोगों ने अपने स्वयं के ज्ञान पर भरोसा किया, लेकिन अंत में विफल रहे जैसे नादाब और अबीहू। अगर परमेश्वर मानव हाथों के बनाये घरों में रहने के लिए इनकार कर सकते हैं, तो वह आराधना जो उसके वचनों पर आधारित नहीं है, कैसे स्वीकार कर सकते हैं?

प्रभु कहते हैं : "यह लोग जो मुंह से मेरा आदर करते हुए समीप आते परंतु अपना मन मुझसे दूर रखते हैं और जो केवल

आत्मिक भोजन

3 जुलाई **विजयी जुलूस** **2 कुरिन्थियों 4:8,9**

संत पौलुस का जीवन सुसमाचार के लिये कष्ट, दुख, संघर्ष और विपत्तियों को झेलने वाला जीवन था। लेकिन इसके बावजूद परमेश्वर ने उन्हें मसीह में विजयी जुलूस में चलाया। यह कितनी आदरणीय एवं गर्व की बात थी। इसलिये हम स्मरण रखें मसीही हर कष्ट, संघर्ष, दुख और यहां तक कि मृत्यु पर भी विजयी होते हैं। वे मसीह में जयवंत से भी बढ़कर हैं।

प्रार्थना -प्रभु, विजयी जुलूस में ले चलने के लिये आपका धन्यवाद करना ना भूलूं।

मनुष्यों की आज्ञा सुन सुन कर मेरा भय मानते हैं।'' यशायाह 29:13 उनकी आराधना केवल मानव नियमों पर आधारित है जो उन्हें सिखाया गया है। अन्य उदाहरण जैसे पौलुस की पत्री कुलुस्सियों 2:23 में है। परमेश्वर का वचन आराधना के लिए पर्याप्त से भी अधिक पर्याप्त है और अन्य बातों (2 तीमुथियुस 3:16,17; व्यवस्थाविवरण 4:2, 12:29-32) के लिए भी।

आइये हम आराधना की प्रासंगिकता की ओर ध्यान दें: जैसा कि हमने पहले भी देखा है कि आराधना हमारे जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। हमें आराधना एक दैनिक दिनचर्या के रूप में या जो हमें अभ्यास करना है, ऐसे नहीं लेना चाहिए। कुछ लोग संगति में और कलीसिया में बैठते हैं, भजन गाते और प्रार्थना करते (संभवत थोड़ी या बिना रुचि के साथ) हम बात कर रहे हैं कि कभी-कभी लोग शारीरिक रूप से मौजूद तो होते हैं, लेकिन मानसिक रूप से अनुपस्थित रहते हैं। आराधना आराधक की शारीरिक और मानसिक दोनों की उपस्थिति की मांग करती है। आराधक को आराधना पूरी इच्छा के साथ करनी चाहिए अन्यथा आराधना का कोई मतलब नहीं बनता। आराधना ऐसी स्थिति में बाकी के जीवन पर उचित प्रभाव नहीं डाल सकती। आराधना में ऐसी लापरवाही वास्तव में तबाही ला सकती है। परमेश्वर ने हमें अवसर दिया है कि आराधना के समय को गंभीरता से लें, जिसके माध्यम से हम न केवल परमेश्वर के लिए स्तुति कर सकते हैं, बल्कि हमारे संबंध को प्रभु के साथ घनिष्ठ बना सकते हैं।

आराधना इस दुनिया की कठोर वास्तविकताओं से बचने के लिए नहीं है जैसे कुछ लोगों को लगता है। आराधना जीवन की आगामी समस्याओं को दूर नहीं कर सकती है, लेकिन आराधना कुछ मायनों में व्यक्ति की सहायता कर सकती है, समस्याओं का सामना डर के बिना करने में, अगर जीवन प्रभु में है। विचार यह है कि हमें प्रभु में समय गुणवत्ता के साथ बिताना चाहिए। नीतिवचन 18:10 ''प्रभु का नाम मजबूत किला है जिसमें धर्मी आदमी भागकर शरण लेता है और सुरक्षित रहता है।'' हमारे प्रभु यीशु एकान्त स्थानों में जाते थे पिता से प्रार्थना करने के लिए, और अपने चेलों से भी कहते थे। जितना हम परमेश्वर के साथ समय बितायेंगे उतना ही हम योग्य व मजबूत बनेंगे इस दुनिया की वास्तविकताओं के साथ लड़ने के लिए।

यह बिल्कुल सच है कि आराधना हमें आराम और राहत देती है। लेकिन क्या आराधना का पूरा उद्देश्य यही है? यदि हमारी आराधना मानसिक रूप से हमें कचोट नहीं रही, विशेष तौर पर हमारी कमजोरियों के संबंध में तो हमारी आराधना अपने उद्देश्य को पूरा नहीं कर रही है। दूसरे शब्दों में आराधना बलिदान की मांग करती है। परमेश्वर के साथ नियमित रूप से संबंध आराधना का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है जो हर समय सुखद नहीं हो सकता। परमेश्वर के साथ आमना सामना दर्दनाक हो सकता है, जिसमें शामिल है बलिदान के लिए बुलाहट या आत्म परीक्षण करना। परमेश्वर का वचन कहता है, इब्रानियों 10:31 ''यह भयानक बात है कि परमेश्वर के हाथों में गिरना।'' आराधना केवल परमेश्वर के अद्‌भुत कामों के लिए शुक्रिया अदा करने के बारे में नहीं है, बल्कि आराधना करते समय हमें और अधिक पता चलता है कि हम कौन हैं।

आज हर विश्वासी को यह पुन: सुनिश्चित करना है, कि क्या वह वास्तविक तौर पर आराधना कर रहा है, क्या उसका जीवन आराधना युक्त है या मात्र रविवार को ही आराधना करना सही मानते हैं। सोचें की हम आने वाली पीढ़ी को क्या संदेश दे रहे हैं? सही एवं वास्तविक रूप से आराधना हर कलीसिया और विश्वासी का उद्देश्य होना चाहिए और मसीह में व्यक्तिगत जीवन सबसे बड़ा उदाहरण है, सच्ची आराधना का। आज पुन: हमें इस बात पर विचार करना है कि क्या हम आराधना करते हुए परमेश्वर के भवन में आते हैं या आराधना करने आते हैं? अगर आराधना करते हुए परमेश्वर के भवन में आते हैं, तो यह प्रमाणित है कि आप एक आराधना करती हुई कलीसिया का हिस्सा हैं। ❑

नितिन हूरी लाल
प्रेस्बिटेरियन थियोलॉजिकल सेमिनरी, देहरादून
हिंदी विस्तार समन्वयक

वचन में और अधिक बढ़ने के लिए आप ''दैनिक भोजन'' भी मंगवा सकते हैं।

आत्मिक भोजन

4 जुलाई | **पहला सा प्रेम** | **प्रकाशितवाक्य 2:1-4**

एशिया माईनर के इन सात कलीसियाओं को लिखे गये पत्र वर्तमान कलीसियाओं के लिये भी उपयुक्त हैं। इफिसुस की कलीसिया द्वारा प्रसंशात्मक कार्य किये गये थे। जिनका वर्णन प्रभु करते हैं। लेकिन इस कलीसिया ने मसीह को पहले समान प्रेम करना छोड़ दिया था। वे आत्मसंतुष्टता का जीवन जी रहे थे जो उनकी बहुत बड़ी भूल थी। भला कार्य करने के चक्कर में हम मसीह को क्या भूल जाते हैं? इफिसुस की कलीसिया ने अच्छे कार्य किये थे लेकिन वे परमेश्वर के पुत्र मसीह यीशु को भूल रहे थे।

प्रार्थना - हे प्रभु, हमारा भला कार्य सदैव आपके नाम को स्मरण रखते हुए होने पाए।

ख्रीस्त गिरजा घर

ख्रीस्त गिर्जाघर झारखण्ड की राजधानी रांची के मुख्य पथ महात्मा गांधी मार्ग पर स्थित है। यह मिशनरियों द्वारा स्थापित झारखण्ड का पहला गिर्जाघर है। इसका निर्माण कार्य 18 नवम्बर 1851 को आरंभ हुआ और 24 दिसंबर 1855 को इसे आराधना के लिये समर्पित कर दिया गया।

झारखण्ड की धरती पर प्रथम मिशनरी 2 नवम्बर 1845 को पहुंचे थे। ये मिशनरी थे एमिल शत्स, फ्रेदिक वत्स, ऑगुस्तुस ब्रांत और ई. थियोडोर यानके। वे जर्मनी के पादरी योहन्नेस एवंजेलिस्ता गोस्सनर के द्वारा भेजे गये थे। उन्होंने परमेश्वर के प्रेम को यहां प्रगट किया। 25 जून 1846 को यहां पहला बपतिस्मा हुआ। जिसका बपतिस्मा हुआ वह एक अनाथ बालिका थी जिसे अन्य बच्चों के साथ मिशनरियों ने अपने जिम्मे में ले रखा था। इस बालिका का नाम मार्था रखा गया। इसके बाद कुछ और बच्चों का बपतिस्मा हुआ।

परंतु दूसरी ओर कुछ वर्ष बाद आये अन्य मिशनरियों के साथ भी कार्य करने पर एक भी धर्मखोजक बपतिस्मा नहीं हुआ। ऐसे में बहुत से मिशनरी हताश होकर यह सोचने लगे कि दूसरे क्षेत्र में चले जाना चाहिये। और उन्होंने पादरी गोस्सनर को इस विषय पर एक पत्र लिखा। पादरी गोस्सनर पत्र पाकर दु:खी हुए। वे बड़े विश्वासी व्यक्ति थे और उन पादरियों के विचार से

सहमत नहीं थे। अत: उन्होंने एक गंभीर पत्र लिखा; छोटानागपुर (दक्षिण झारखण्ड) के लोगों के मन फिराने का समय आया नहीं, यह जांचना तुम्हारा काम नहीं। यदि लोग सुसमाचार, अनन्त जीवन की बातें ग्रहण नहीं करते तो उनको न्याय के दिन के विषय में बताओ। तुम्हारा कर्तव्य यही है, कि इनके मन फिराने के लिए प्रार्थना करते जाओ और प्रचार करना मत छोड़ो, बाकी परमेश्वर के हाथ में छोड़ दो। यहां जर्मनी देश में हम लोग, तुम लोगों के लिये और भी प्रार्थना करेंगे कि परमेश्वर तुमको और तुम्हारे कार्य पर आशीष दे!''

पत्र पाकर मिशनरियों ने प्रचार का तरीका बदल दिया। वे पहले से ज्यादा समय प्रार्थना में बिताने लगे। परिणाम यह हुआ कि 9 जून 1850 को झारखण्ड में पहला धर्म खोजी बपतिस्मा हुआ। जिन चार वयस्कों ने बपतिस्मा लिया था उनके नाम थे: नवीन डोमन, केशो भगत, बंधु उरांव और घूरन उरांव। इस दिन इनके साथ सात बच्चों को भी बपतिस्मा दिया गया। 26 अक्टूबर 1851 ई. को दो मुण्डा, 1 अक्टूबर 1855 ई. को नौ बंगाली, 8 जून 1866 को दो खड़िया तथा 10 मई 1868 ई. को 'हो' परिवार के बपतिस्मा से इस कलीसिया में जनसंख्या बढ़ने लगी।

दूसरी ओर पवित्र आत्मा ने पादरी गोस्सनर पर इस आनन्द को पहले ही प्रगट कर दिया था। एक सुबह गोस्सनर ने अपने एक मित्र से कहा कि मुझे लगता है कि हमें रांची में जल्द ही फल मिलने वाला है क्योंकि पवित्र आत्मा ने मुझे रात में प्रेरित किया कि मैं रात भर रांची के लिये प्रार्थना करूं। यह 9 जून 1850 से कुछ दिन पहले की बात थी। और जब रांची से मिशनरियों का पत्र आया तो वे प्रभु में बहुत आनन्दित हुए और अपने कोष से उन्होंने तेरह हजार रुपये गिर्जाघर बनाने के लिए भेज दिया। और यह लिखा कि गिर्जाघर बड़ा बनाना क्योंकि उसे प्रभु में निश्चय था कि यहां परमेश्वर की कलीसिया में बहुत से लोग प्रवेश करेंगे। और इस प्रकार ख्रीस्त गिर्जाघर का निर्माण हुआ।

यह गिर्जाघर अनेक अनुभवों से गुजर चुका है। 1857 में

आत्मिक भोजन

5 जुलाई | **सत्य का ज्ञान** | **इब्रानियों 10:26-31**

पापी मनुष्य के लिये उद्धार परमेश्वर का अनुपम उपहार है, प्रभु यीशु ने स्वयं कहा ''तुम सत्य को जानो और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।'' निम्न पदों के द्वारा लेखक हमारा ध्यान इस बात की ओर खींचता है कि हम एक बार सत्य के ज्ञान को प्राप्त करने के बाद अर्थात् पापों की क्षमा पा लेने के बाद यदि हम बार-बार पाप करते हैं तो हम परमेश्वर के भयानक दण्ड से नहीं बचेंगे। इसलिये हम जानबूझ कर पाप करके अपने अमूल्य विश्वास को खोनेवाले ना बनें।

प्रार्थना - प्रभु, सत्य का ज्ञान प्राप्त करके स्थिर और दृढ़ता से खड़ा रहूं।

इसे क्षतिग्रस्त किया गया था। इस पर तोप से गोले दागे गये थे, चर्च ऑरगन को पूरी तरह नष्ट कर दिया गया और बहुत सारा आन्तरिक नुकसान पहुंचाया गया। फिर भी मुख्य ढांचा बना रहा और आज तक इसमें आराधना की जाती है। पर आज भी इस दु:खद घटना की निशानी गिर्जा भवन में है। यह गिर्जाघर के पश्चिम दीवार में है। इसमें तोप का गोला लगा हुआ है और उसके बगल लिख दिया गया है ''याकूब का ईश्वर मेरा शरण''। इसके बगल एक बड़ी घड़ी लगाने के लिये इसमें एक गोल आकार का जगह बनाया गया था। परंतु प्रथम विश्व युद्ध के कारण जर्मनी से घड़ी नहीं आ पायी । इस स्थान में **"Christ Church - G.E.L. Church"** लिखा हुआ है।

10 जुलाई 1919 को नेशनल मिशनरी कॉंसिल के द्वारा भेजे गये जांच अधिकारियों के सम्मुख इस कलीसिया के स्थानीय अगुवों ने यह निर्णय लिया था कि वे बिना किसी विदेशी मदद के स्वयं कलीसिया को चलाएंगे। यह ऐसी परिस्थितियों में हुआ जब विश्व युद्ध के कारण जर्मन मिशनरियों को अचानक देश छोड़ देना पड़ा और इस कलीसिया के भविष्य के लिये विचार किया जा रहा था। इस घोषणा के कारण यह स्वायत कलीसिया बन गई। इस स्वायतता की घोषणा इसी गिर्जाघर में की गई थी।

यह गिर्जाघर भारत की हर एक कलीसिया के लिये गौरव प्रेरणा है। यहां पुरुष पादरियों के साथ महिला पादरी भी सेवा प्रदान करती हैं। जनसाधारण को भी आराधना की अगुवाई और उपदेश देने का अवसर मिलता है। यहां प्रभुभोज हर कलीसिया के लोगों को दी जाती है और हर वर्ष बहुत से लोग यहां परमेश्वर की कलीसिया में प्रवेश होते हैं। ❑

रेव्ह. अनूप जॉली भेंगरा

लेखक रांची हेड क्वार्टर कांग्रीगेशन के पादरी हैं एवं गोस्सनर थियोलॉजिकल कॉलेज, रांची में विज़िटिंग लेक्चरर हैं

कविता

एक ख्वाइश

नन्हा सा तेरा पौधा हूं, जल को बरसा दे मुझ पे तू
कच्चा हूं बर्तन मिट्टी का, जरा आग से तपा दे तू,
नहीं औकात मेरी, पेड़ बन जाऊं यूं खुद से मैं,
निकल आये जो सूखी डाल, माली बनके छांटना तू।

नन्हा सा तेरा पौधा हूं, जल को बरसा दे मुझ पे तू
हवा के इन थपेड़ों को, हर दिन ही सहता रहता हूं
पर डर नहीं दिल में मेरे, क्यूंकि नींव मेरी है यीशु,
गर किसी दिन जो उखड़ने, की भी नौबत हो मेरी,
जानता हूं साथ पर्वत, सा रहेगा मेरे तू।

नन्हा सा तेरा पौधा हूं, जल को बरसा दे मुझ पे तू
तेरे अनुग्रह की छाया में, जब बढ़ जाऊंगा यीशु,
फल आयेंगे कुछ ऐसे, कि दुनिया तेरी मैं कर दूं
कवायद होगी बिजली की, कि गिर जाएं वो फल सारे,
पर बादल का खम्भा बन, छत मेरी बनना तू।

नन्हा सा तेरा पौधा हूं, जल को बरसा दे मुझ पे तू
जब हो जाये वक्त मेरा, तेरी संगत मैं चाहता हूं,
किसी से क्या मेरा वास्ता, जगह तेरे घर में चाहता हूं,
जब होगा दफन मेरा, ये शरीर मिट्टी में,
खुली होंगी न आंखें ये, और बांहों में होगा तू,
नन्हा सा तेरा पौधा हूं, जल को बरसा दे मुझ पे तू।।

अतुल कुमार सिंग

आत्मिक भोजन

6 जुलाई **आदर-सम्मान** **इब्रानियों 11:14-16**

संसार में ऐसे अनेक महान लोग थे और हैं जिनको हम आदर-सम्मान देने में नहीं चूकते। लेकिन कभी हमने इस बात का अहसास किया है कि संसार में सबसे आदर योग्य कोई है तो वह परमेश्वर हैं। वह स्वयं ही कहते हैं ''...जो मेरा आदर करेगा मैं उनका आदर करूंगा'' (1 शमुएल 2:30)। हमारे विश्वास के अग्रणी या प्रणेताओं ने परमेश्वर का भय माना। उनका आदर और सम्मान किया। परमेश्वर पर उनके अटल विश्वास के कारण वे परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहरे।

प्रार्थना - हे प्रभु, आपको आदर-सम्मान देने से कभी इंकार ना करूं।

व्यंग

दुनिया किसके कब्जे में ?

उस दिन मैं गिर्जा आराधना की दूसरी पाली में जाने को तैयार हो रहा था। तभी कॉल बेल बजी। मैंने सोचा कि मेरा मित्र होगा, जिसका इंतजार मैं कर भी रहा था। मेरा दूसरी पाली की आराधना में जाने का प्लान भी उसी के आने पर टिका था। उसके उस समय आ जाने से सोचा कि तीसरी पाली की आराधना में शामिल होऊंगा। बाहर निकल कर देखा बरामदे की ग्रिल के बाहर मेरा मित्र नहीं, एक 45-50 का अधेड़ और दो 25-26 वर्ष के युवा थे। तीनों ही अच्छे वस्त्रों में थे। अकसर ऐसे लोग कॉल बेल बजाकर आपको संयत रहने को मजबूर कर ही देते हैं। भले ही सामान बेचने वाले हों, चाहे कोई नई प्रोडक्ट का इश्तहार करने वाले हों, चाहे कोई चंदे के नाम पर बड़ी राशि के ठग हों। कोई भी हो, आप अपना अभद्र व्यवहार उन्हें नहीं दिखा सकते जब तक पक्की जानकारी न हो। अब तो राजनीतिक पार्टियों ने ही ऐसा महौल बना दिया है कि आपको हर बात पर सजग रहना है अन्यथा बिना वजह ही सर पर ओले पड़ सकते हैं।

उनको देख मेरा मूड और ही टेढ़ा हो गया सोचा, 'अब तो दूसरी पाली के गिरजा जाने के प्लान में फेर-बदल के लिए दूसरी वजह भी सामने आ गई है।'

याद आया, 'शायद इंश्योरेंश वाले होंगे।' कई दिनों से रिमाईंडर आ रहा था, 'आपके कार का इंश्योरेंस ड्यू है। चलो एक काम तो निपट जाएगा।' मैंने सोचा, फिर भी मैंने पूछ ही लिया, "कहिए क्या काम है?"

"हम आपका 10 मिनट समय लेंगे।", उनमें से सीनियर व्यक्ति ने कहा।

'समय कितना मूल्यवान है, लगता है यह सज्जन इस बात को नहीं जानते। अन्यथा 10 मिनट यूं ही नहीं मांगते।', मैं अंदर ही अंदर उबल पड़ा। लेकिन फिर ख्याल आया, 'मेरे जैसे सेवा निवृत व्यक्ति के समय का मूल्य ही क्या है?' लेकिन उस मूल्यहीन समय को या तो अपने मित्र को या गिरजा को देना चाहता था। 10 मिनट का समय बिना जाने ही उन लोगों को भला यूं ही कैसे दे देता? लेकिन मजबूरन द्वार खोलना ही पड़ा। न जाने क्यों दोनों जवान बाहर ही रुक गए । केवल सीनियर अंदर आया।

'उस दिन आपके बेटे से भी कुछ बातें करनी थी लेकिन उसे चर्च के लिए निकलना था इसलिए नहीं रुका। इसलिए आपसे अनुरोध है आप थोड़ा सुन लीजिए।', उन्होंने कहा।

'यानी उस दिन मेरे बेटे को गिर्जा जाने से रोकने के इरादे से आये थे आज उसके बाप को रोकने आए हैं?', मैंने मन ही मन सवाल किया। लेकिन मुख से बाहर मेरी बात शब्दों के रूप में न निकली। उन्हें सोफे पर बिठाया और मैंने पूछा, "कहिए क्या कहना है आपको?"

'पहले आप इस वीडियो को देख लीजिए।", कहकर उन्होंने मोबाईल पर एक विडियो चालू कर मुझे दे दिया। मेरे पल्ले कुछ न पड़ा। वैसे भी मेरा ध्यान कहीं और था। मैं चर्च के लिए लेट भी हो रहा था। मैंने मोबाईल उन्हें वापस थमा दिया और कहा, 'जनाब मेरे पल्ले कुछ नहीं पड़ रहा है आप अपने श्रीमुख से ही मुझे समझाएं तो अच्छा होगा।", टी.वी. चैनलों की भाषा भी अब सरकार के बदलने से बदल गई है। उन्हें देखते सुनते मेरी भाषा भी उसी दिशा में जा रही है। वैसे भी समय के साथ हमें बदलना ही चाहिए। लेकिन मोबाईल के मामले में पीछे इसलिए था कि उतनी महंगी मोबाइल 'अफोर्ड' नहीं कर सकता था।

"क्या आप जानते हैं सारी दुनिया शैतान के कब्जे में आ गई है? मैं आपको अपनी कलीसिया के आराधनाओं में लेकर आपको शैतान से बचाना चाहता हूं।", उन्होंने कहा।

'वह तो मैं देख ही रहा हूं। मैं आपको कह रहा हूं कि गिरजा जाना है बजाय इसके कि मुझे जाने के लिए कहते आप मेरा रास्ता रोके हुए हैं', मन ही मन मैंने उनसे कहा, लेकिन फिर प्रकट में कहा, "लेकिन मैं पहले ही से एक कलीसिया का सदस्य हूं और अभी उसी आराधना में जाने की तैयारी में हूं और लेट भी हो रहा हूं।", मैंने उन्हें अपनी व्यथा बताने की कोशिश की।

"आपकी कलीसिया आपको शैतान से बचा नहीं

आत्मिक भोजन

7 जुलाई **आत्मा के फल** **गलातियों 5:22,23**

प्रेम, आनन्द, शांति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास एवं संयम वे नौ फल हैं, जिनसे हमारा मसीही जीवन परिपूर्ण रहना चाहिये। इन नौ फलों के द्वारा ही हमारा कलीसियाई एवं व्यक्तिगत जीवन सुन्दर एवं आशीषित बनता जाता है। लेकिन अफसोस इस बात का है कि शरीर के काम हमारे जीवन को पतन के मार्ग पर ले जा रहे हैं। इसलिये प्रभु का वचन कहता है कि हमारा जीवन आत्मा के नौ प्रभावशाली फलों से लदा रहे।

प्रार्थना - हे प्रभु, शरीर के काम नहीं लेकिन पवित्र आत्मा के फलों से सुसज्जित होकर यह जीवन हमेशा अग्रसर होता जाये।

सकती।'', उन्होंने बहुत जोर देकर कहा।

''लेकिन आप इतने दावे के साथ कैसे कह सकते हैं? हमारी कलीसिया भी उसी जीवते परमेश्वर की आराधना करना सिखाती है।'', मैंने तल्खी से पूछा।

''क्योंकि आपकी कलीसिया बाइबल के आधार पर नहीं है।'', उन्होंने बहुत जोर देकर कहा।

मैंने आश्चर्य से उसकी ओर ताका। फिर अपनी कलाई घड़ी पर नजर डाली 10:30 बजे रहे थे। चर्च के लिए ज्यादा ही लेट हो रहा था। मित्र का भी पता नहीं था। मैंने कहा, ''जनाब अब ज्यादा समय आपको नहीं दे सकता फिर कभी आईएगा। तब समझने की कोशिश करूंगा कि कहां हमारी कलीसिया आधारहीन है।'' कहकर जूते पहनने के लिए उठाया। इसे देख वे भी उठ खड़े हुए पता नहीं मेरी आतुरता देखकर या जूते देखकर। जाते-जाते एक परची उन्होंने छोड़ दिया था जिसपर लिखा था, 'यह दुनिया असल में किसके कब्जे में है? 'परमेश्वर के'? 'मानवजाति के'? या 'किसी और के'? मैं पाठकों के समक्ष ये प्रश्न छोड़ जा रहा हूं।

मैं चर्च पहुंचा, उपदेश चल रहा था यानी काफी देर हो चुकी थी। सचमुच शैतान अपना काम कर चुका था। ❑

निरल कोनगाड़ी
रांची, झारखण्ड

नन्हीं दुनिया

''तुम मुझे क्यों ढूंढ़ते थे? क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के भवन में होना अवश्य है?'' (लूका 2:49)

रंग भरो

बच्चो, रंग भरो और पहचानो कि यह चित्र सुसमाचार के किस दृश्य को दर्शाता है?

आत्मिक भोजन

8 जुलाई **भला काम** **फिलिप्पियों 1:3-6**

फिलिप्पियों की यह पत्री ''आनंद'' की पत्री के रूप में जानी जाती है। संत पौलुस पंद्रह बार ''आनन्द'' शब्द का प्रयोग करते हुए यह कहता है कि परमेश्वर ने अपने अनुग्रह के कारण हमारे जीवनों में भला कार्य आरंभ किया है। यह भला कार्य हमें एक नयी सृष्टि बनाना था। अत: हमें इस बात के लिये सतत प्रयास करते रहना चाहिये कि हम परमेश्वर की आकांक्षाओं एवं इच्छा के अनुरूप जीवन व्यतीत करें।

प्रार्थना - हे प्रभु, भले काम को अंजाम तक पहुंचाने के लिये मुझमें धैर्यशीलता प्रदान करें।

सेवा में बढ़ते कदम

वर्तमान में लोग अपनी भाषा को भूलते जा रहे हैं। यह बहुत ही दुखद है, ऐसा होने का कई कारण हम बता सकते हैं। परंतु हमारे बीच में कई ऐसे लोग हैं जो केवल कारणों की जानकारी नहीं रखते परंतु समस्याओं के समाधन हेतु प्रयास भी करते हैं। 'मसीही आह्वान' एक ऐसी ही शख्सियत से आपकी मुलाकात कराना चहती है जो लंबे समय से झारखण्ड में बोली जानेवाली मुण्डारी भाषा में परमेश्वर के वचन को रेडियो के माध्यम से लोगों के बीच में प्रचार करते हैं। उनसे की गई यह बातचीत आपलोगों के सामने प्रस्तुत है।

मसीही आह्वान – सर्वप्रथम आप हमारे पाठकों के लिए अपना परिचय बताएं।

रेव्ह. सोय – मैं रेव्ह. सुसारन सोय हूं। मैं इश्वरीय बुलाहट के आधार पर जी.ई.एल. चर्च के अंतर्गत सेवकाई में कार्यरत हूं। मैंने अपनी पुरोहितीय सेवकाई गोस्सनर थिओलोजिकल कॉलेज, रांची में आध्यात्मिक शिक्षा देने के द्वारा आरंभ की। तत्पश्चात मैंने पेरिश पुरोहित होकर विभिन्न पेरिशों में सेवा कार्य किया। फिलहाल मैं केन्द्रीय परिषद् कार्यालय, जी.ई.एल. चर्च, रांची में कार्यालय सचिव की कलीसियाई सेवा में कार्यरत हूं। मैंने बी.टी.एच. की शिक्षा गोस्सनर थियोलोजिकल कॉलेज रांची से, बी.डी. की शिक्षा सिरामपुर यूनिवर्सिटी से, एम.टी.एच. की शिक्षा क्रिश्चयन यूनिवर्सिटी, वाशिंगटन से और एम.ए. की शिक्षा रांची यूनिवर्सिटी से सफलतापूर्वक प्राप्त की।

मैं ग्राम चुकलू, उम्बुलबहा मंडली/पास्तरेत, साउथ ईस्ट डायोसिस का स्थायी निवासी हूं। मैं फिलहाल अपने परिवार के साथ डिबाडीह, मध्य दाऊदनगर में स्थित अपने आवास में रहता हूं और वहीं से चर्च की सेवा करता हूं।

मसीही आह्वान – मुण्डारी भाषा में काम करना है, यह विचार आपके मन में कैसे आया और इसकी शुरुआत कैसे हुई?

रेव्ह. सोय – मेरी मातृभाषा मुण्डारी है। वृहद संख्या में मुण्डारी भाषा बोलने वाले हैं जो शहर की अपेक्षा गांवों में निवास करते हैं।

उन्हें अपनी भाषा में यीशु का शुभ-संदेश सुनाना आवश्यक है और मुण्डारी भाषा से उन्हें अवगत कराना है क्योंकि खासकर शहरी क्षेत्र में यह भाषा लुप्त सी हो रही है। हमारी भाषा, संस्कृति और पहचान खतरे में पड़ती जा रही है।

परिचय	
नाम :	रेव्ह. सुसारन सोय
पद :	कार्यालय सचिव केन्द्रीय परिषद् कार्यालय, जी.ई.एल. चर्च, रांची।

इसे बचाना अति आवश्यक है। इसी प्रयास में मैं मुण्डारी भाषा से जुड़ा हुआ हूं।

वास्तव में मैं 1990 ई. से फीबा रेडियो के साथ जुड़ा रहा। इसके द्वारा धार्मिक मुण्डारी कार्यक्रम 'सुगड़ सड़ा' (मधुर आवाज) और 'रसिका दुरंग' (हर्ष के गीत) के लिए प्रोग्राम प्रोडयूसर रहा। तत्पश्चात 20 अप्रैल 2009 ई. को राइट रेभ. डॉ. नेलसन लकड़ा, मोडरेटर ने पत्र लिखकर Trans World Radio India (TWRI) से मुण्डारी रेडियो प्रोग्राम प्रोडयूसर नियुक्त किया। मैं सरती जीदन (सत्य जीवन) मुण्डारी कार्यक्रम के लिए यीशु का शुभ-संदेश अब तक तैयार करता आ रहा हूं।

मसीही आह्वान – आप लंबे समय से रेडियो में मुण्डारी

आत्मिक भोजन

9 जुलाई **नया समाज** **इफिसियों 2:5-10**

आज संसार की बिगड़ती दशा इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य पतित और परमेश्वर से अलग है। लेकिन परमेश्वर का धन्यवाद हो परमेश्वर ने हमें मसीह में जिलाया है। हम अपने पापों में मरे थे लेकिन विश्वास द्वारा अनुग्रह से हमारा उद्धार हुआ है। हम मसीह में जिलाये गये हैं। हम स्वयं में एक नया समाज एवं नई सृष्टि हैं।

प्रार्थना – प्रभु, नया समाज, नई सृष्टि बनने के बाद हम ज्योति के रूप में चमकें।

भाषा में प्रचार कर रहे हैं, आपके लिए इसका अनुभव कैसा है?

रेव्ह. सोय - यह सच है कि मैं लंबे अरसे से रेडियो वक्ता के रूप में मुण्डारी भाषा से यीशु का शुभ-संदेश और गीत प्रस्तुत करके वचन प्रसार सेवा करते आ रहा हूं।

इससे मुझको यह अनुभव हो रहा है कि परमेश्वर ने मुझे यह वरदान दिया है कि यीशु का शुभ-संदेश सुनाकर और मधुर गीतों को गाकर बहुत से श्रोताओं को यीशु की साक्षी दूं और वे उस में विश्वास करके उद्धार पाएं। मुझे यह आभास हो रहा है कि रेडियो के श्रोतागण प्रवचनों और मुधर गीतों से जुड़ रहे हैं तथा अपनी मौलिक मातृभाषा को सुनकर सीखने का अवसर पा रहे हैं।

यह निश्चय ही मेरे लिए एक प्रोत्साहन का विषय है।

मसीही आह्वान - 'जीजस' फिल्म को मुण्डारी में करने का विचार कैसे आया इसमें कितना काम हुआ है और यह लोगों के बीच में कब आएगा? ('जीजस फिल्म का अनुवाद कई भारतीय भाषाओं में अब तक किया जा चुका है और बहुत ही जल्द यह मुण्डारी में भी आनेवाली है)।

रेव्ह. सोय - जिस यीशु के वचन और शिक्षा का मैं प्रचार करता हूं उस यीशु को लोग 'जीजस' फिल्म के माध्यम से अपनी आंखों से देखेंगे और मुण्डारी भाषा में बोलते हुए सुनेंगे तब उन पर यीशु का गहरा असर पड़ेगा और वे उसे करीब से जानेंगे। यह भी संभव है कि मुण्डारी फिल्म के माध्यम से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मुण्डारी भाषा का विकास हो। इन आकांक्षाओं को साकार करने की मेरी तमन्ना है।

मुण्डारी भाषा में फिल्म डबिंग करने का कार्य पूरा हो गया है और इसे सेंसर बोर्ड के पास भेज दी गई है। वहां से मंजूरी मिलते ही जून 2017 के अन्त तक लोगों के बीच में आ जाने की पूरी उम्मीद है।

मसीही आह्वान - आपकी सेवकाई के लिए आपको बहुत-बहुत शुभकामना! हमारे पाठकों के लिए कोई विशेष संदेश आप देना चाहेंगे?

रेव्ह. सोय - मेरी सेवकाई के लिए शुभकामना व्यक्त करने हेतु धन्यवाद। सामान्य और धार्मिक विषयों में स्नातकोत्तर की शिक्षाएं प्राप्त करके परमेश्वर का अनुग्रह ही है कि मुझे विभिन्न सेवा कार्यों के अवसर प्राप्त होते रहे हैं।

मसीही आह्वान पाठकों और मुण्डारी श्रोताओं के प्रति मैं हार्दिक आभार प्रकट करता हूं। वे मेरे इन सेवा कार्यों के प्रति अपनी अभिरुचि व्यक्त करते हैं, यह हर्ष का विषय है।

पाठकों और श्रोताओं के पत्रों तथा टेलीफोन सम्पर्क आदि से यह ज्ञात होता है कि वे मेरे सेवा कार्यों से जीवन/परिवार की समस्याओं का समाधान करने में अगुवाई एवं सहयोग प्राप्त करते हैं। यीशु ही है जो हमारी सारी समस्याओं का समाधान करते हैं। अत: आप सब से मेरा आग्रह है कि नियमित पारिवारिक प्रार्थना-उपासना पर ध्यान केन्द्रित करें और यीशु से निरंतर जुड़े रहें। ❑

प्रिय पाठको,

यदि आपको या आपके मित्रों और रिश्तेदारों को **'मसीही आह्वान'** नियमित रूप से प्राप्त नहीं हो रही है तो इसकी जानकारी हमें अवश्य दें।

आपकी जानकारी के आधार पर उचित समाधान करने का प्रयास किया जाएगा।

सम्पर्क करें :-

मसीही आह्वान

गुड बुक्स बिल्डिंग, दूसरी मंजिल, मेन रोड, रांची, झारखण्ड - 834001

टेलीफोन नंबर (0651) - 2331394 • Email : masihiahwan@gmail.com

आत्मिक भोजन

10 जुलाई **मसीह की महिमा** **फिलिप्पियों 1:20,21**

आज संसार में लोग अपना नाम, यश और महिमा को सदा ऊंचाई पर देखना चाहते हैं लेकिन यदि हम अपने जीवन से अपने प्रभु परमेश्वर को महिमा दें, उसके लिये जीयें और उसी के लिये मरें तो इससे अधिक प्रसन्नता की क्या बात हो सकती है! काश आज हमारे जीने और मरने का कारण केवल मसीह और मसीह ही हो।

प्रार्थना - प्रभु, आप एवं आपकी महिमा के लिये जीऊं और मरूं।

नामुमकिन नहीं

किसी अनहोनी की आशंका से भयभीत होने के बावजूद ईवा मैसी ने खुद को संभालने की पुरजोर कोशिश की। किंतु जब डर जिन्दगी की परछाई बन जाता है, तो सहजता से जिन्दगी जीना मुश्किल हो जाता है। कुछ ऐसा ही हुआ था ईवा मैसी के साथ। कितना भयभीत हो उठी थी उस दिन, जब उसके साथ जबरन रेप हुआ था। वह चीखती रही। चिल्लाती रही किंतु सब बेकार साबित हुआ। फर्श पर पड़ी छोटी-सी बच्ची शिप्रा ने कभी अपनी मां को देखा, तो कभी उस अमानवीय पुरुष को, जिसने उसकी मां की शालीनता की हत्या कर डाली थी।

वक्त का परिंदा अपने खुले आकाश में तीव्र गति से निरंतर उड़ता रहा। कई वर्ष बीत गए। किंतु ईवा का भयभीत मन घटित घटना की खुरचने की आवाज से खुद को दूर न रख सका। कई बार ईवा को लगा कि उसे अपने पति राजीव से कुछ भी छिपाना नहीं था। कह दिया होता तो जिन्दगी इस तरह से भय की मुट्ठी में बंधकर गुजरती नहीं। किंतु औरत के लिए यह सब कुछ कह पाना विष पान करने से कम नहीं होता। पति कभी भी यह सब कुछ बरदाश्त नहीं कर पाता। ईवा को इस बात का पता था। इस कारण कई महीनों तक वह चुपचाप रहकर सब कुछ सहती रही।

एक दिन दफ्तर से लौटकर राजीव ने कहा, ''ईवा, शिप्रा अब बड़ी हो गई है। उसे एक अच्छे स्कूल और कॉलेज की जरूरत है। मैंने तबादले की अर्जी दी थी, मंजूर हो गई। अगले महीने हम यह मकान, मोहल्ला, शहर सब कुछ छोड़कर उस शहर को जा रहे हैं, जहां शिप्रा का उज्जवल भविष्य है।''

मकान छूट गया, जगह छूट गई, शहर छूट गया किंतु ईवा अपने भयभीत मन से रिहा न हो पाई। भीतर ही भीतर वह टूटती रही। किसी बुत-सा जीवन खुद में सम्मान-भाव की कमी के बीच उठते-बैठते कराहता रहा। चीखता-चिल्लाता रहा। खाली-खाली सी जिन्दगी! अगर कुछ था तो अतीत की पीड़ा थी, जहां आनेवाला कल उसे कभी भी माफ नहीं कर पाता। यह सच है कि ऋतुएं बदलती हैं तो जीने का ढंग भी बदल जाता है। कुछ नयापन...कुछ नई बातें...और कुछ नई भावनाएं मस्तिष्क पर अपना साम्राज्य बनाने लगती हैं। किंतु ये समस्त बातें ईवा के आशाहीन भविष्य का एक हिस्सा थीं जिसे सिर्फ उसकी मृत्यु ही तहस-नहस कर सकती थी।

कई बार ईवा ने आत्महत्या करने की बात सोची। प्रयास भी किया। किंतु आंखों के सामने राजीव और शिप्रा का उभरता चेहरा उसे रोकता रहा। वैसे जो कुछ भी हुआ था, उसकी सजा राजीव और शिप्रा को क्यों मिले? जिन्दगी भर भोगना तो उसे ही था।

रविवार था। आराधना खत्म हो चुकी थी। चर्च से बाहर निकलते-निकलते ईवा ने कहा, ''राजीव थोड़ा-सा रुक जाना। मैं प्रार्थना करके अभी लौटी।''

''ठीक है। मैं और शिप्रा चर्च के बाहर तुम्हारा इंतजार कर लेते हैं। शिप्रा को भूख लगी है। जल्दी आना।''

वेदी के पास अपने घुटनों पर गिरकर सलीब के नीचे अपनी दोहरी जिन्दगी की छटपटाहट के बीच ईवा ने कहा, ''जीजस, मुझे क्षमा कर देना। मैंने पाप किया है। महापाप। कहां जाऊंगी इस घर को छोड़कर? बदचलन हूं न। आपके घर में भी मेरे लिए कोई जगह नहीं। मैंने आपके और स्वर्ग के विरुद्ध में पाप किया है। घोर पाप। राजीव को संभाल लेना, प्रभु! आज नहीं तो कल मेरा यह महापाप कहां गुप्त रह पाएगा? मुझे अपना नहीं, बल्कि राजीव का डर है। कैसे सह पाएगा यह सब कुछ?''

घर पहुंचकर नाश्ते के टेबल पर राजीव ने कहा, ''ईवा, आज का संदेश बहुत सुन्दर था। व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री को प्रभु यीशु ने यह कहकर क्षमा कर दिया, ''मैं, तुझे दंड नहीं देता, जा फिर पाप न करना।''

ईवा ने राजीव को देखा। एक आशा बंधी। फिर दूसरे ही क्षण टूट गई। उसने अपने मन में कहा, ''कोई भी पति अपनी पत्नी को भला ऐसे पाप के लिए क्षमा कर सकता है क्या?''

''तुमने कुछ कहा नहीं? क्या तुम्हें आज का संदेश पसंद नहीं आया?''

''बहुत अच्छा था। मन को छू देनेवाला। किंतु, जब किसी मनुष्य को क्षमा करने की बात आती है तो ऐसा नहीं होता। लोग ऐसी स्त्री को घृणा से देखते हैं। उसे बदचलन और कुलटा कहते हैं। उसे अपनी हवस का बार-बार शिकार बनाते हैं।''

राजीव चुप हो गया। मनुष्य के जीवन का एक बहुत बड़ा सच उसकी आंखों के सामने था। वह खुद भी उन लोगों में शामिल था, जिनके दिल में नफरत और हिंसा पलती है। कई बार राजीव ने खुद को धिक्कारा। अपने मसीही होने के दावे पर रोया। ऐसे महापाप के लिए माफ करना सहज नहीं होता। किंतु, परमेश्वर में सब कुछ संभव है। जो बात मनुष्य खुद नहीं कर पाता, वो बात ईश्वर कर

आत्मिक भोजन

11 जुलाई — **मिट्टी के घड़े** — **2 कुरिन्थियों 4:7-10**

संत पौलुस ने मसीही विश्वासियों की तुलना एक कमजोर मिट्टी के घड़े से की है। आज यह प्रश्न बहुत बड़ा है कि मसीह के सुसमाचार का धन, परमेश्वर की महान सामर्थ मानवीय कमजोर शरीर में समाहित है। इसका उत्तर यह है कि हम जैसे कमजोर विश्वासी व्यक्ति को भी प्रभु अपने काम के लिये प्रयोग में ला सकते हैं।

प्रार्थना - हे प्रभु, मुझ कमजोर पात्र को भी अपने राज्य के विस्तार के लिये काम में लाएं।

देता है। क्षमा करना ईश्वरीय बात है। और क्षमा करने की यह अद्भुत बात वही मनुष्य कर पाता है, जिसने खुद को पूरी रीति से ईश्वर के हाथों में समर्पित कर रखा हो।

वक्त गुजरता रहा। ईवा का मन उसके महापाप से छिद्र होता रहा। जीवन के तमाम रंग नाउम्मीदी की कब्र में दफन करके ईवा एक जिन्दा लाश बन चुकी थी। स्तब्ध होकर सलीब को देखना कभी उसे अच्छा लगता, तो कभी आक्रोश की छतरी, खुद-ब-खुद खुल जाती।

एक दिन राजीव को ऑफिस में दिल का दौरा पड़ा। देखते-ही-देखते एक ही झटके में जिन्दगी सिमट गई। सब कुछ हमेशा के लिए थम गया और वक्त अपने पथ पर जिन्दगी को बैठाकर एक ऐसी जगह ले गया, जहां से कोई लौट नहीं पाता।

राजीव की मृत्यु के करीब डेढ़ साल बाद नीना माथुर ने कहा, ''ईवा बेटी, कब तक जिन्दगी इस प्रकार से चलेगी? आज मैं हूं। तुम्हारे पापा हैं। आखिर कब तक हम दोनों तुम्हारे साथ रह पाएंगे। दूसरी शादी कर लेती तो मैं और तुम्हारे पापा निश्चिंत हो जाते। तुम्हारी बड़ी फिक्र लगी रहती है।''

''मां, मुझे अब शादी-वादी नहीं करनी। बहुत हो गया। ख्वाबों और ख्यालों की पालकी पर बैठी थी। वैवाहिक जीवन के कितने सपने बुने थे राजीव के साथ। पर, क्या हुआ एक ही झटके में दुःख का सैलाब मेरी मुट्ठी में बंधकर रह गया।''

''देखो बेटी, जो हुआ, उसे कौन रोक सकता था। राजीव का हमारे साथ इतने ही दिनों का था। हर जिन्दगी एक वक्त पर साथ छोड़ देती है। राजीव लौटकर तो नहीं आ सकता। तुम्हारी तो सारी जिन्दगी पड़ी है।''

मां की बात सुनकर ईवा को लगा कि हर जिन्दगी बेशक एक वक्त पर साथ छोड़ देती है। किंतु उसने तो जीते जी ही राजीव का साथ छोड़ दिया था।

कुछ पल की चुप्पी के बाद ईवा ने कहा, ''मैं जानती हूं मां। सब जानती हूं। एक बच्ची की मां हूं। कहने की जरूरत नहीं। जहां तक शिप्रा की बात है, पाल लूंगी। क्या बिना बाप के कोई बच्चा पाला नहीं जा सकता?'

''फिर भी कभी अपनी खामोशी में बैठकर सोचती।'' मां की बात सुनकर ईवा को लगा कि बिजली के किसी नंगे तार से वह चिपक कर रह गई थी। राजीव को तो पत्नी का सुख नहीं दे सकी। उसके जीते जी बदचलन बन गई और अब यह दूसरी शादी।

कुछ तस्वीरें...कुछ यादें समेटकर नीना माथुर चुप हो गईं। ईवा से आगे कुछ भी कहने-सुनने की हिम्मत जुटा नहीं पाई। कहतीं भी तो क्या कहतीं। कुकुरमुत्तों की तरह फैला ईवा का दर्द संघर्षशील बनकर नीना माथुर की जिन्दगी में हर वक्त उन्हें पछाड़ता रहा। जब तक वह जिन्दा रहीं, ईवा के लिए ईश्वर के आगे घुटने टेंकती रहीं। जब मौका मिलता, ईवा से कह बैठतीं, ''देख बेटी, समस्याएं परेशानियां और मजबूरियां किसकी जिन्दगी में नहीं आतीं। और रही बात मौत की, तो वह कब अपनी होती है? मौत का दबदबा तो हमेशा जिन्दगी में रहता है। वैसे भी मौत की गिरफ्त से कौन छूट पाया है?

वक्त बीता और जिन्दगी की दौड़ में ईवा अपनी बेटी शिप्रा के साथ बिल्कुल अकेली रह गई। मां-बाबा दोनों चल बसे। उम्र पक चुकी थी और बैसाखी पर जिन्दगी कब तक और कहां तक खींची जा सकती थी। वैसे भी पकी हुई उम्र के साथ जिन्दगी का छूटना कभी खोटा नहीं होता। किंतु, राजीव का असामयिक निधन हर हाल में खोटा था। भरी जवानी में हुई मौत को स्वाभाविक तो कहा नहीं जा सकता।

इतना सब कुछ हो जाने के बावजूद ईवा ने कभी भी न तो लोगों पर तीखे प्रहार किए और न ही खुद को ईश्वर से कभी दूर रखा। अपनी बेटी शिप्रा के साथ चर्च की सीढ़ियों पर चढ़ती-उतरती रही। किंतु, जब कभी भी चर्च की वेदी के ऊपर लगी सलीब को देखती तो चौंक उठती। अचानक से यीशु की जगह राजीव को सलीब पर ठुका हुआ देखकर किसी घुप्प अंधेरे में खुद को छुपाने का प्रयास करती। कुछ पल, वो बीता हुआ कल तारोताजा हो जाता। जिन्दगी का वो बदसूरत पल किसी काले नाग की तरह बार-बार डंसने लग जाता। चेहरे पर दहशत की ढेर सारी रेखाएं उभर कर पसर जातीं और क्षण प्रति क्षण राजीव का लहूलुहान चेहरा बार-बार आंखों के सामने घूमने लगता।...और जीवन और मृत्यु के बीच किसी अदृश्य बिन्दु पर खड़ी ईवा फूट-फूटकर रो पड़ती।

इस संघर्षशील जिन्दगी में ईवा को थामने के लिए कई हाथ बढ़े। रिश्ते आए। कुछ अफसोस जाहिर करनेवाले तो कुछ अपनत्व का अच्छा-खासा महल खड़ा करनेवाले। बात कुछ भी हो, ईवा की खूबसूरती लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र थी। जब दाल नहीं गली तो किस्से-कहानी चर्चा का विषय बनकर किसी जर्जर मकान की तरह जिन्दगी को कमजोर करने लगा। बहुत कुछ टूटा। बहुत कुछ बिखरा। किंतु, ईवा न तो कभी टूटी और न ही किसी को अपनी जिन्दगी के कोरे कागज पर हस्ताक्षर करने दिया, जबकि लोगों ने ईवा की जिन्दगी के चेक को भरकर कई बार भुगतान

आत्मिक भोजन

12 जुलाई — **हमारा दृष्टिकोण** — **फिलिप्पियों 2:1-4**

आज आमतौर पर हमारा संघर्ष या विवाद का एक बड़ा कारण हमारी सोच या समझ है। हम दूसरों को अपने से बेहतर नहीं समझते। हमें दूसरों के प्रति नकारात्मक नहीं परंतु सकारात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिये। हमें अपनी ही नहीं लेकिन दूसरों की रुचि या पसंद का भी ध्यान रखना चाहिये। हमें अपने अहंकार का परित्याग करना चाहिये।

प्रार्थना - हे प्रभु, दूसरों को अपने से बेहतर समझने का यथासंभव प्रयास करता रहूं।

करना चाहा। लोगों की कामनाएं बंद पड़ी कोठरी में पड़ी चीजों की तरह बेकार रहीं।

शाम ढल चुकी थी और अंधकार अपनी गुफा से निकलकर धरती पर रोज की तरह विचरण करने लगा था। किंतु, उस दिन का अंधकार पुरानी स्मृतियों का घरौंदा बनाकर, ईवा को बहुत कुछ कह देना चाहता था। बीहड़ में भटकते हुए मुसाफिरों की तरह ईवा स्मृतियों की बीहड़-भूमि पर देर-बहुत-देर तक भटकती रही। सुख-संतोष भी कोई चीज होती है। किंतु, यह सब कुछ ईवा के लिए धीरे-धीरे खिसकती हुई उम्र के साथ खिसकती चली गई थी।

राजीव की मृत्यु के करीब दो वर्ष के बाद ईवा का मन किया था कि वह राजीव की मेज की दराज को खोले। उसमें रखी चीजों को उलटे-पलटे। वैसे भी जब आदमी ही न रहे, तो उसकी चीजों से कैसा लगाव?

वह रात कुछ अजीब थी। कुछ खुशियां, कुछ गम बटोरकर ईवा के आंचल में सुबह-सुबह जमीन पर गिरे हरसिंगार के फूलों की तरह बेजान होकर भी खूबसूरत थी। मेज की दराज में रखी डायरी को देखकर ईवा चौंक पड़ी। कांपते हाथों से डायरी उठाया। फिर देर रात तक पढ़ती रही। तभी अचानक से कुछ पंक्तियों ने ईवा को कुछ इस प्रकार से थपथपाया कि उसकी सोच का कद बहुत छोटा पड़ गया। वह बार-बार उन पंक्तियों को पढ़ती रहीं, ''ईवा, पहली बार जो कुछ तुम्हारे साथ हुआ, मैं समझ सकता था कि तुम निर्दोष थी। क्योंकि जो कुछ भी हुआ था वह तुम्हारी मर्जी के खिलाफ था। किंतु, बाद में तुम बराबर की दोषी रही। तुमने पहले ही दिन सब कुछ बता दिया होता तो न बात आगे बढ़ती और न ही तुम मेरी निगाह से गिरती। सब कुछ जानते हुए भी मैं चुप रहा, क्योंकि विवाह के दौरान मैंने सुख और दु:ख में तुम्हारे साथ रहने की प्रतिज्ञा की थी। मेरे लिए बहुत सहज था कि मैं तुम्हें तलाक दे देता। मैं जानता हूं कि हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी में कई छिद्र पड़ गए थे। फिर भी तुम्हारे लिए एक अपनापन मेरे भीतर कहीं-न-कहीं स्वाभाविक गति से सुलगता रहा। यह वह क्षण था ईवा, जब सलीब पर यीशु की पीड़ा मेरी ताकत बनकर मुझे हर क्षण संभालती रही। मैं तुम्हें खुद से अलग नहीं कर सकता था और न ही शिप्रा को दंडित। नि:संदेह हमारी जिन्दगी आड़ी-तिरछी रेखाओं से भर गई है। फिर भी जिन्दगी तो अपनी है। बहुत-बहुत अपनी।...''

देर रात तक ईवा तकिए में मुंह छुपाकर सुबकती रही।

सुबह जब नींद खुली, तो सात बज चुके थे। दीवट पर रखी लालटेन अब भी जल रही थी। आंखें मिचते हुए ईवा ने उठकर लालटेन बुझा दी। वैसे भी दिन के उजाले में लालटेन का जलना निरर्थक था। बेवजह कोई बात होती रहे, अच्छा नहीं होता। तभी ईवा को लगा कि वह खुद भी तो राजीव की उपस्थिति-अनुपस्थिति में अपनी जिन्दगी की दीवट पर जलती हुई वह लालटेन बनकर रह गई थी, जिसकी दीप्ति में शीप्रा के लिए ढेर सारी खुशियां बटोर पाना नामुमकिन नहीं था। ❑

रेव्ह. जुलियस अशोक शॉ
राजकोट में रहकर प्रभु की सेवा करते तथा स्वतंत्र रूप से लेखन करते हैं।

सूचना

पाठकों द्वारा नवीनीकरण, विज्ञापन, दान या उपहार इत्यादि का भुगतान शीघ्रता से करने के लिए 'मसीही आह्वान' बैंक में राशि हस्तातंरण (NEFT) की सुविधा प्रदान कर रही है।

एनईएफटी के लिए विवरण

NAME	**- GOOD BOOKS TRUST ASS. PVT. LTD. MASIHI AHWAN**
BANK	**- BANK OF INDIA**
BRANCH	**- CLUB SIDE, RANCHI**
A/C No.	**- 490210110007168**
IFSC CODE	**- BKID0004902**

राशि हस्तांतरण के बाद अपनी सदस्यता संख्या, हस्तान्तरण की तिथि, फोन नम्बर, नाम और पता की जानकारी :-
E-mail : goodbooksranchi@gmail.com द्वारा दें।
या फिर फोन नं. 0651-2331394 पर सूचित करें।

प्रबंधक
मसीही आह्वान

आत्मिक भोजन

13 जुलाई | **दासता** | **गलातियों 5:1**

दासता चाहे राजनैतिक हो या पाप की यह सदैव कष्टप्रद होती है। मनुष्य यदि शैतान की गुलामी की जंजीरों से मुक्त हो जाये तो यह उसके लौकिक एवं परलौकिक जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी। इसलिये परमेश्वर का वचन कहता है, मसीह ने स्वतंत्रता के लिये तुम्हें स्वतंत्र किया। अत: पाप के दासत्व में फिर से न फंसो।

प्रार्थना - हे प्रभु, पाप के दासत्व से मेरा जीवन सदा ही मुक्त रहे।

प्रार्थना के कुछ तत्व

परमेश्वर के वचन के अनुसार हम मसीहियों को प्रार्थना क्यों, किनके लिए और कैसे करनी चाहिये? इसका बोध होना परम आवश्यक है। उत्पत्ति 4:26 के अनुसार एनोश, जो शेत का पुत्र एवं आदम का पोता था, उसके समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे थे। इसका मुख्य कारण यह है कि मानवों के पाप के कारण परमेश्वर ने मानवों से दूरी बना ली थी। अब मानवों को ही परमेश्वर को प्रसन्न करना था, अत: लोग प्रार्थना करने लगे।

पवित्र वचन में ऐसे अनेक व्यक्तित्व हैं जो चरवाहे थे एवं वे परमेश्वर से अपनी प्रार्थनाओं का अच्छा प्रतिफल पाये। इब्राहीम, इसहाक, याकूब, मूसा, दाऊद आदि। मूसा 40 वर्षों तक अपने ससुर यित्रो की भेड़ बकरियों को चराता रहा एवं उसने इस दौरान भेड़ सी दीनता को ग्रहण करके परमेश्वर को प्रसन्न किया। चरवाहों के साथ एक पक्ष ये भी है, उनके प्राणियों से 'लोहू' की प्राप्ति होती है, जिससे व्यवस्था के अनुसार मानवों का पापमोचन हुआ करता था। प्रभु यीशु ने भी अपना 'लोहू' जगत के मानवों के पापमोचन हेतु बहाया है। जब हम प्रभु यीशु के 'लोहू' के द्वारा प्रायश्चित करके नया जीवन प्राप्त कर लेते हैं तब हमारी प्रार्थनाएं प्रभावी हो जाती हैं।

अगर हम वर्तमान काल में चले आयें एवं इस बात पर विचार करें कि प्रार्थना क्यों करनी चाहिये? उसकी विधि वचन के अनुसार क्या है? इन पक्षों का उत्तर हमें पवित्र-वचन में मिलता है। परमेश्वर ने हमारी सृष्टि ही प्रार्थना करने के लिये की है। अय्यूब 32:8 में स्पष्ट किया गया है कि जिन जीवधारियों को परमेश्वर ने बनाया है, उनमें सिर्फ प्राण होता है, पर जगत के सभी मानवों में 'आत्मा' भी होती है। यह 'आत्मा' परमेश्वर का हम मनुष्यों में एक अंश है। परमेश्वर स्वयं सिर्फ 'आत्मा' है (देखें यूहन्ना 4:24)। जब हम अपने 'आत्मा' के तत्व को परमेश्वर के वचन के अनुसार प्रबल करते जाते हैं, तब यही 'आत्मा' हमारे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने लगता है। शनै: शनै: हमारी प्रार्थनाएं परमेश्वर को प्रसन्न करने लगती हैं एवं जब हम प्रभु यीशु के वचनों तथा पवित्र आत्मा के भागी हो जाते हैं तब पवित्र आत्मा हमारे साथ हमेशा वास करता है। 'पवित्र आत्मा' वचन की हरेक उन बातों को हमें बताता और सिखाता है कि हमें संसार में कैसा जीवन व्यतीत करना है। परमेश्वर के राज्य की खोज में यही आत्मा हमारी सहायता करता है, जब हम परमेश्वर के राज्य के अभिलाषी हो जाते हैं, जो भविष्य में निश्चित प्रगट होने वाला है, तब हमारी सांसारिक आवश्यकताएं भी परमेश्वर प्रदान करने लगते हैं जो हमारी भलाई के लिये होती हैं।

प्रति दिन हमें अपने दिन की शुरुआत प्रार्थना से करनी चाहिये, जिसमें हम अपने मन की एक-एक बातों को परमेश्वर के सामने उंडेल दें। आपकी इस प्रार्थना में, आप अपने परिवार के एक-एक सदस्यों के लिए, कलीसिया के लिए, सुसमाचार प्रचार के लिए, बीमार भाई-बहनों के लिए, अपने राष्ट्र के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। इस प्रार्थना में सभी आत्मिक छुटकारे एवं सांसारिक योजनाओं को भी शामिल किया जा सकता है।

आत्मिक भोजन

14 जुलाई **हमारे प्रयास** **1 थिस्सलुनिकियों 5:22,23**

आज संसार में जिस तरह बुराई अपनी चरम सीमा पर है उससे क्या बचा जा सकता है? प्रभु चाहते हैं कि हम इस बुरे एवं कलंकित संसार में बुराई से और हर तरह के पाप से अपने को बचाये रखें। स्मरण रहे कि हमें शुद्ध बनाने की प्रक्रिया में स्वयं परमेश्वर की अहम भूमिका है। हम अपने प्रयासों से तो पवित्र नहीं बन सकते। हमें पवित्र बनाने में पवित्र आत्मा हमारी मदद करता है।

प्रार्थना - हे प्रभु, पवित्र आत्मा की मदद के द्वारा पवित्रता का जीवन व्यतीत कर सकूं।

आराधनालय में अगर अवसर दिया जाये तब विषय पर केंद्रित संक्षिप्त प्रार्थना करनी चाहिये (मध्यस्थता की प्रार्थना को छोड़)।

प्रार्थना का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू हमें वचन में देखने को मिलता है। प्राचीन काल में परमेश्वर भविष्यद्वक्ताओं एवं चुने हुए लोगों को बहुधा दास की संज्ञा देते थे। मूसा जीवन पर्यन्त दास ही बना रहा (देखें गिनती 12:7, यहोशू 1:13)। प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को मित्र कहा, पौलुस ने आत्मा पर चलने वाले लोगों को परमेश्वर का पुत्र घोषित किया।

इन 3 श्रेणियों के अन्तर्गत हम पाते हैं - दास, मित्र, पुत्र। कभी-कभी हम इन श्रेणियों के स्तर को भूल जाते हैं। दास पूरी दीनता से कुछ मांगता है, मित्र को कुछ अधिकार होता है, वयस्क पुत्र वारिस के तौर पर मांग सकता है। परंतु सभी श्रेणियों में दीनता आवश्यक है। ऐसा देखा गया है जब हमें परमेश्वर की ओर से कुछ मिलने लगता है, तब हम परमेश्वर पर अधिकार जताने लगते हैं। उदाहरणार्थ, हे प्रभु ऐसा कर, हे प्रभु यह दें, हे प्रभु इसे चंगाकर आदि आदि। बिना दीनता प्रार्थनाएं शारीरिक हो जाती हैं कभी-कभी हम कुछ लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं एवं जब उसका प्रतिफल मिल जाता है तब हम अमुक व्यक्ति को गर्व से बता देते हैं कि यह मेरी प्रार्थनाओं का प्रभाव है। ऐसी बातों से हम परमेश्वर को पीछे एवं स्वयं आगे होना चाहते हैं। यहीं से हमारा ह्रास आरंभ हो जाता है।

जब हम किसी विषय पर अपनी गुप्त प्रार्थना करें और उसका प्रतिफल दिखाई ना दे तो हमें निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि कभी-कभी उन विषयों पर परमेश्वर अपनी युक्तियों को हमारे जीवन के लिये अपने समय की परिपूर्णता पर पूरा करते हैं।

अनेक लोग कहते हैं, आज मेरा 'उपवासी प्रार्थना' का दिन है, इन बातों को बताना उचित नहीं है।

जय के जीवन के लिये अपने और अपने प्रियों के लिये प्रार्थना करें। कभी-कभी हम बहुत दिनों तक बंधनों में पड़े रहते हैं। ऐसे बंधनों को हम बिना परमेश्वर की सहायता से नहीं तोड़ सकते। इन बंधनों के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करना आवश्यक है, तब हम उस पर जय पाते हैं (यशायाह 64:7; नीतिवचन 21:31)।

वर्तमान में प्रार्थना का प्रयोजन अतिआवश्यक है, हम जो भी खाद्य पदार्थ, दवाइयां, सौंदर्य प्रसाधन इस्तेमाल करते हैं उनकी शुद्धता के लिये भी प्रार्थना करें (1 तीमुथियुस 4:4,5)। जितनी वस्तुएं आज मानव निर्मित हैं, वे परमेश्वर की सृष्टि से ही ली जाती हैं। सब ऐसी वस्तुओं के लिये जो हम सभी के देखते लेते हैं, सबके सामने आंख बंद करके, मन में प्रार्थना करके ग्रहण करें अगर कोई पूछे तो उसे बताएं कि आप ऐसा क्यों करते हैं। यह आप का व्यावहारिक प्रचार होगा एवं परमेश्वर की महिमा का कारण होगा।

प्रार्थना में लगे रहने से हम अपने प्रियों की सुरक्षा सांसारिक एवं आत्मिक पक्षों में करने पाते हैं। दुर्घटनाओं से अकाल मृत्यु से, हमारी प्रार्थनाएं हमें एवं हमारे प्रियों को बचाती हैं। परमेश्वर का वचन कहता है - ''जगत के अंत तक मैं सदैव तुम्हारे साथ हूं।'' आनेवाले दिनों में ख्रीष्ट-विरोधी शक्तियां प्रबल होती जायेंगी, आपदाएं बढ़ती जायेंगी, संभावित तृतीय विश्व युद्ध भी आनेवाले दिनों में देखने को मिल सकता है। आत्मिक युद्ध आसन्न है, दीर्घकालीन प्रभाव अतिकष्टदायी होंगे। इन सबसे अगर कोई बचने पायेगा, तो सिर्फ वे लोग जो प्रार्थनारत रहेंगे। ❑

वी. के. मैथ्यू
शहडोल (म.प्र.)

''अगर आप लोगों के साथ अच्छा बर्ताव करेंगे, तो वे भी आप के साथ अच्छा बर्ताव करेंगे - कम से कम 90% बार।''

- फ्रेंकलिन डी रूसवेल्ट

वचन में और अधिक बढ़ने के लिए आप ''दैनिक भोजन'' भी मंगवा सकते हैं।

आत्मिक भोजन

15 जुलाई | **सुहावने पांव** | **यशायाह 52:7**

प्रस्तुत पद पुराने नियम की पुस्तक यशायाह से लिये गये हैं जो यरूशलेम के छुटकारे की तस्वीर पेश करते हैं। शायद हम सभी इस बात से सहमत होंगे कि शुभ समाचार मन को आनन्द एवं आशा से भर देता है। और यह खबर या शुभ समाचार कि प्रभु यीशु में पापों की क्षमा, उद्धार एवं अनन्त शान्ति है तो यह दुनिया की सबसे सुन्दर खबर है। इसलिये उद्धार का शुभ संदेश लाने वाले व्यक्ति के पांव तो सुहावने हैं।

प्रार्थना - प्रभु, मैं उद्धार, शांन्ति, कल्याण एवं आशा का शुभ संदेश लाने वाला बन सकूं।

विशेष निवेदन

प्रिय लेखक / लेखिकाएं,

विषय : लेख के लिए आग्रह।

हिन्दी मसीही साहित्य के क्षेत्र में 'मसीही आह्वान' का अमूल्य योगदान रहा है और पत्रिका ने लंबे इतिहास का सफर तय किया है। यह सब आप लेखकों के सहयोग से ही संभव हो पाया है। आप सबों के सहयोग से ही हम पत्रिका को प्रकाशित कर पा रहे हैं । अतः इसी आशा के साथ हमारी पत्रिका हेतु रचनाओं के लिए आपसे विनम्र आग्रह है, मैं आशा करती हूं कि आप जैसे आशिषित एवं परमेश्वर के सेवकों की रचनाओं से 'मसीही आह्वान' के पाठक वर्ग अवश्य लाभ प्राप्त करेंगे। आप नीचे दिए गए किसी भी विषय के लिए अपनी रचनाएं भेज सकते हैं।

मसीही दृष्टिकोण से स्वतंत्रता के अर्थ	(अगस्त महीने के लिए 5 जुलाई तक)
हमारे जीवन में शिक्षा की आवश्यकता और महत्व	(सितंबर महीने के लिए 15 जुलाई तक)
मसीही जीवन में / गांधी जी के जीवन में प्रभु यीशु का प्रभाव	(अक्टूबर महीने के लिए 15 अगस्त तक)
परमेश्वर की दृष्टि में बच्चों का स्थान	(नवंबर महीने के लिए 15 सितंबर तक)
ख्रीस्त के जन्म का उद्देश्य / जन्म पर्व का हमारे जीवन में महत्व	(दिसंबर महीने के लिए 15 अक्टूबर तक)
नव वर्ष की आशीष, संकल्प	(जनवरी महीने के लिए 15 नवंबर तक)

उपरोक्त शीर्षक आपकी सहायता के लिए दिए गए हैं। लेख, कहानी, गीत अथवा कविता के माध्यम से आप बाइबल आधारित अपना सुविचार व्यक्त कर सकते हैं। विषय आधारित आप अपना शीर्षक डाल सकते हैं।

लेख के लिए शब्द सीमा	1500 – 2000 है।
कहानी के लिए शब्द सीमा	3000 है।
गीत अथवा कविता के लिए शब्द सीमा	150–200 है।

परमेश्वर आपको और भी अधिक अपनी सेवकाई में इस्तेमाल करे इसी शुभकामना के साथ प्रेम भरा नमस्कार !

धन्यवाद!

नीलम सोनाली तिर्की
संपादक
मसीही आह्वान

नोटः अपनी रचनाओं के साथ अपना संक्षिप्त परिचय, पासपोर्ट साईज फोटो, पूरा डाक पता (पिन कोड के साथ) और अपना मोबाईल नंबर अवश्य लिखें।

आत्मिक भोजन

16 जुलाई **शीघ्र आनेवाला** **प्रकाशितवाक्य 22:20,21**

आज संसार में एक विश्वासी जीवित है तो इस आशा से जीवित है कि उसका उद्धारकर्ता एक दिन लौट कर शीघ्र ही आनेवाला है। धन्य आशा है विश्वव्यापी या विश्व कलीसिया की क्योंकि प्रभु अपनी देह को लेने आयेंगे। वह क्या ही धन्य दिन और आशीषित दिन होगा जब प्रभु अपने लोगों को अपने साथ ले जायेंगे। इसलिये हर विश्वासी को जागृत रहना चाहिये, ताकि यदि प्रभु आ आ जायें तो वह उनके साथ जा सके।

प्रार्थना – हे प्रभु, आपके भव्य आगमन हेतु सैदव तैयार रहूं।

हार

❀❀❀

'जब उन्होंने यह सुना तो प्रसन्न हुए, और उसे रुपए देने का वचन दिया। अतः वह अवसर ढूंढ़ने लगा कि उसे किसी प्रकार पकड़वा दे।'

– मरकुस 14:11

मिलेतुस दा काफी खुश दिख रहे थे। आज की सुबह उनके जीवन को बदलने वाली है। वे अल सुबह ही उठ गए और आंगन में बिखरी ओस की बूंदों पर टहलने लगे। उन्होंने अपनी पत्नी मारिया को भी जगाना जरूरी नहीं समझा और वे अपने प्यारे कुत्ते के साथ ही चलते रहे।

आज ऐसेम्बली-इलेक्शन के रिजल्ट आनेवाले हैं। मिलेतुस दा ने सुंदरपुर सुरक्षित सीट से चुनाव लड़ा है। वे ही विनिंग-कैंडीडेट थे इसलिये जब सेक्यूलर विचारधारा वाली पार्टी ने उन्हें टिकिट नहीं दिया तो अन्तर्द्वन्द्व में फंस गए थे।

''पुरखों ने इसी पार्टी को समर्थन दिया है मिलेतुस दा! हम दूसरी विचारधारा के बारे में सोच भी नहीं सकते हैं।' बुजुर्ग इम्मानुएल ने मिलेतुस दा के द्वन्द्व को समझकर अपनी बात रख दी थी।

कई गांवों में बैठकें हुईं। अपने लोगों से मिलेतुस दा मिलते रहे अन्ततः उन्होंने अपने अंतस की आवाज सुनकर दूसरी विचारधारा के लोगों से समझौता कर लिया और उनके प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ रहे थे।

चर्चेज में भी लोग दो गुटों में बंट गए थे। कुछ का कहना था कि मिलेतुस दा को हमने यहां तक पहुंचाया है इसलिये उन्हें विपक्षी पार्टी के साथ समझौता नहीं करना चाहिए था। उन्होंने हमारे साथ विश्वासघात किया है। वहीं नई पीढ़ी उनके साथ थी क्योंकि उनको अपना प्रत्याशी जीतता हुआ दिख रहा था। वे सिद्धांतों को तोड़नेवालों को ही बहादुर मानते हैं।

दोपहर का डेढ़ बज रहा होगा। ढोल-नगाड़ों का शोर और पटाखों की आवाज से सुंदरपुर का आकाश गुंजायमान हो गया। लोग झूम रहे थे, आज अपने मिलेतुस तीसरी बार चुनाव जीत गए।

'मिलतुस...! अब आपको नामान की तरह सतर्क रहना होगा क्योंकि विपक्षी चालाक हैं वे आपको अपने समाज के विरुद्ध खड़ा कर हथियार बना सकते हैं; अपनी झुर्रियों को दोनों हाथों से छूते हुए नीरल काका ने सशंकित होते हुए कहा।

'ओफ्फो! काका आप बिल्कुल चिन्ता ना करें। हम कभी भी आपके वचनों को नहीं भूलेंगे।' आप बस हमारे लिए प्रार्थना करते रहिए। बेफिक्री के साथ मिलेतुस दा ने कहा।

अगले क्रिसमस में मंत्री मिलेतुस दा ने बड़ा जश्न किया। सुंदरपुर, चान्हों, लोदाम सभी जगहों से लोग आए। नहीं बुलाए गए तो केवल नीरल काका! समाचारपत्रों में सरकार के एकमात्र क्रिश्चियन मंत्री के जश्न की खबरें छपीं। खबर ने पूरे प्रदेश में तहलका मचा दिया। दैनिक 'आजकल' ने तो मंत्री महोदय की तस्वीरें भी छापीं। कुछ भाई लोगों ने सोशल मीडिया पर सवाल दागे-'क्या ऐसी राष्ट्रवादी सरकार में अश्लीलता का नंगा नाच होना चाहिए...?'

'क्या पाश्चात्य सभ्यता और विदेशी धर्म हमारी नीतियों के अनुकूल हैं...?' युवाओं में चर्चा का विषय बना दिए गए मंत्री महोदय।

महुए की सोंधी महक के साथ वातावरण में फैलने लगा-मिलेतुस दा को कभी भी मंत्री पद से हटाया जा सकता है। रांची से गांव आई मुनकी कह रही है-'सुंदरपुर की जमीन पर खदानें खोली जाएंगी। मिलेतुस दा से बिना पूछे ही किसी बाहरी कम्पनी के साथ सरकार ने समझौता कर लिया है।'

मंत्री महोदय के बंगले की रौनक घटने लगी है। शायद मिलेतुस दा को उनकी ही पार्टी ने प्रभावी नहीं रहने देने की शपथ खाई है। वही मिलेतुस जिसकी एक हुंकार पर यही विपक्ष कांपता था अब उसने उन्हें नाम का मंत्री बनाकर बेबस कर दिया कि या तो वे चुपचाप इस्तीफा दे दें या खून के घूंट पीते रहें।

10 अप्रैल की सुबह नीरल काका बंगले में पहुंचे। कुछ और समर्थक भी आए थे। उनसे वे कह रहे थे-'संयमी और सचेत रहो। तुम्हारा शत्रु शैतान गर्जनेवाले सिंह की भांति इस ताक में रहता है कि किसको फाड़ खाए। विश्वास में दृढ़ रहकर उसका विरोध करो। यदि मसीह के नाम के कारण तुम्हारी निंदा की जाती है तो तुम धन्य हो।'

तभी अंदर से मारिया की चीख निकली। जंगल में आग की तरह खबर फैल गई मिलेतुस दा नहीं रहे।

आत्मिक भोजन

17 जुलाई **भौतिक एवं आत्मिक आशीषें** **2 कुरिन्थियों 9:8-11**

आशीषें चाहे आत्मिक हों या भौतिक यह मनुष्य को खुशहाली एवं स्थिरता प्रदान करती है। लेकिन इन्हें पाने के लिये हमें उदार बनना होगा। प्रभु का वचन भी कहता है, ''मांगो तो तुम्हें दिया जायेगा''। उदारता से देने के बाद ही हमारी धार्मिकता हमेशा स्थिर बनी रहती है। हम धनी तभी बनेंगे जब हम दूसरों के प्रति उदार बनेंगे।

प्रार्थना – हे प्रभु, हम दूसरों के प्रति उदार मनोवृत्ति रखने वाले बन सकें।

अगले दिन अखबारों में छपा-मंत्री महोदय ने जहर पीकर आत्महत्या कर ली है उन्होंने अपने सुसाइड नोट में लिख था-हे परमपिता, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब मैं तेरा पुत्र कहलाने के योग्य नहीं रहा।

नीरल काका! मैं नामान सूरयानी की तरह स्थिर नहीं रह पाया। अपने लोगों के विस्थापन का दर्द नहीं देख पाता, इसलिये मुझे हो सके तो क्षमा कर देना। अपने विश्वास में दृढ़ रहकर शैतान का सामना करने के लिए सबको सिखाना।

नीरल काका अपने हाथों से चेहरे की झुर्रियों को छुपाकर फफक पड़े। ❑

कुमार एस. लोरिश
लेखक शासकीय विद्यालय में शिक्षक हैं
और सुसमाचार प्रचारक भी हैं।
जगदीशपुर (छ.ग.)

कविता

(झारखण्ड की राजधानी रांची स्थित 'जीईएल चर्च इन छोटानागपुर एण्ड असम', छोटानागपुर सहित भारत की प्रमुख कलीसियाओं में से एक है। इसकी स्थापना और विकास का जीवंत इतिहास है। जर्मनी से आए चार प्रारंभिक मिशनरियों एमिल, फ्रेड्रिक, अगुस्तुस और थियोडोर के अथक परिश्रम और प्रार्थनाओं का परिणाम है यह कलीसिया। फादर गोस्सनर ने इनको कलकत्ते के रास्ते भेजा था जो भारत में प्रवेश का पूर्वी मार्ग है। नवंबर 2016 में रचे गये इस गीत को मिशन पर्व के लिए श्री बारला द्वारा खासतौर पर रचा गया था। इस गीत के द्वारा श्री बारला प्रारंभिक मिशनरियों सहित प्रारंभिक मसीहियों को भी श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहे हैं।)

ओहे हमार मिशन अगुवा रहैं !!!

1. सात समुद्र पार कईर के
बर्लीन से रांची मझे पूर्बी रास्ते
भेजलैं गोस्सनर कलिसिया हमरे लगीन
शिक्षा प्रसार चिकित्सा उपचार धर्म प्रचार खातिर
चाईर विदेशी मिशनरी मेहमान मनके
अपन देश के छोईड़ छोटानागपुर में
ओहे हमार मिशन अगुवा रहैं !!

2. नदी नाला पार कईर के
एमिल, फ्रेड्रिक, अगुस्तुस, थियोडोर
अलै अनपढ़ मझे अलक जगावे लगीन
जलायके ज्ञान दीप शिक्षा प्रसार खातिर
स्कूल कॉलेज बनालैं जगह जगह रांची में
अपन भाई बहन के छोईड़ हीरानागपुर में
ओहे हमार मिशन अगुवा रहैं !!

3. पहाड़ पर्वत पार कईर के
ग्रामीण दुर्गम पथे चलते फिरते
अलै निस्वार्थ चिकित्सा सेवा देवे लगीन
दुःखित रोग-ग्रसित मनके उपचार खातिर
अस्पताल बनालैं शहर गांव देहाते
अपन माय-बाप के छोईड़ वतन से दूर
ओहे हमार मिशन अगुवा रहैं !!

4. जंगल झार पार कईर के
सुःख-चैन त्याग कर सेवा वास्ते
अलैं आदिवासी मनके ईश्वर संतान बनावे लगीन
मुण्डा, उरांव खड़िया मझे धर्म प्रचार खातिर
देलैं बपतिस्मा संस्कार आदिवासी भाई मनके
अपन घर परिवार के छोइड़ जर्मन से दूर
ओहे हमार मिशन अगुवा रहैं !!

नियारन बारला (नियर)
रांची, झारखण्ड

आत्मिक भोजन

18 जुलाई **धन्यवादी बनें** **1 थिस्सलुनिकियों 5:16-18**

वचन परमेश्वर ही का लिखित प्रकाशन है। वचन को पढ़के हम परमेश्वर की योजनाओं, इच्छाओं, आज्ञाओं एवं अन्य सभी बातों के विषय में जानकारी प्राप्त करते हैं। आज के इस वचन के द्वारा हमने यह सीखा कि हम हर परिस्थिति में धन्यवादी बने रहें क्योंकि मसीह यीशु में हमारे लिये परमेश्वर की यही इच्छा है।

प्रार्थना - प्रभु, हमेशा आनन्दित रहूं, निरंतर प्रार्थना करता रहूं एवं सभी परिस्थिति में आपको धन्यवाद देता रहूं।

मूसा का चुनाव

''उसे पाप के थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दु:ख भोगना अधिक उत्तम लगा'' (इब्रा. 11:25)

'जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य को जीवन के हर पहलू में दो रास्तों में से एक को चुनना पड़ता है। जैसे, बच्चे के जन्म के बाद उसको किस स्कूल में दाखिला करायें? उसे किस ट्रेनिंग में भेजें, किस से उसकी शादी हो आदि ऐसे कई चुनाव हमें करने पड़ते हैं। ऐसे ही मूसा को चुनाव करना था। इस आयत के मुताबिक दो तरह के जीवन बिताने वाले लोग थे। मूसा को इन दोनों जीवन में से एक को चुनना था।

1. पाप में जीवन बिताने वाले और सुख भोगने वाले।

2. परमेश्वर के लोगों के साथ दु:ख भोगने वाले।

1. पाप में जीवन बिताने वाले और सुख भोगने वाले :- मूसा को चुनाव करना था कि वह पाप में जीवन बिताने वालों के साथ रह कर, जीवन में सांसारिक सुख भोगे। पाप में जीवन बिताने वाले कौन हैं? पाप में जीवन बिताने वाले मिस्री लोग थे।

मिस्री लोगों के बहुत से देवी-देवता थे। ये लोग इन देवी देवताओं की उपासना करते और इनकी पूजा करते थे। ''उस रात को मैं मिस्र देश के बीच में होकर जाऊंगा, और मिस्र देश के क्या मनुष्य क्या पशु, सब के पहिलौठों को मारूंगा और मिस्र के सारे देवताओं को भी दंड दूंगा'' (निर्ग. 12:12)। परमेश्वर यहोवा ने मूसा को जो दस आज्ञाएं दी थीं, उनमें पहली आज्ञा थी ''मुझे छोड़ दूसरों को परमेश्वर करके न मानना'' (व्यवस्था. 5:7)। दूसरी आज्ञा यह दी ''तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना जो आकाश में या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है। तू उनको दंडवत् न करना और न उनकी उपासना करना, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूं और जो मुझ से बैर रखते हैं उन के बेटों, पोतों और पर-पोतों को पितरों का दंड दिया करता हूं। और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं उन हजारों पर करुणा किया करता हूं'' (व्यवस्था 5:8-10)। मिस्री लोग सच्चे सामर्थी और जीवित परमेश्वर को छोड़ उन देवी देवताओं की उपासना करते थे।

दुष्टात्माओं और जादूगरों से सहायता लेते :- मिस्री लोग जादू-टोन्हा, भूत-सिद्धि आदि पर विश्वास करते थे। परमेश्वर ने जो शक्ति लूसीफर (शैतान) को दी थी, जब उसे नीचे स्वर्ग से पृथ्वी पर फेंका, तब वह शक्ति लूसीफर से वापस नहीं ली। शैतान उसी शक्ति का उपयोग कर लोगों को परमेश्वर के विरोध में बहकाता है। जादूगर और भूत-सिद्धि करने वाले शैतान की शक्ति का प्रयोग करते हैं। मूसा और हारून मिस्र के राजा के पास गये कि उसे सच्चे जीवते परमेश्वर के बारे में बतायें। जब उन्होंने राजा को सच्चे परमेश्वर के बारे में बताया तब फिरौन ने उन से कहा, तुम कोई आश्चर्यजनक काम अपने परमेश्वर का दिखाओ। हारून ने अपनी लाठी फिरौन और उसके कर्मचारियों के आगे डाल दी और वह अजगर बन गई। तब फिरौन ने अपने पंडितों और जादूगरों को बुलवाया। मिस्र के जादूगरों ने भी आकर अपने तंत्र-मंत्र से वैसा ही किया। उन्होंने भी अपनी-अपनी लाठी को डाल दिया जो अजगर बन गई। हारून की लाठी जो अजगर बन गई थी, उस अजगर ने तंत्र-मंत्र द्वारा बने अजगरों को निगल लिया। परमेश्वर तंत्र-मंत्र टोन्हा करने वालों के लिए कहते हैं, ''ओझाओं और भूत साधने वालों की ओर न फिरना और ऐसों की खोज कर के उनके कारण अशुद्ध न हो जाना, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं'' (लैव्य. 19:31)। ''यदि कोई पुरुष या स्त्री ओझाई अथवा भूत की साधना करे, तो वह निश्चय मार डाला जाये, ऐसों पर पत्थराव किया जाये, उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा'' (लैव्य. 20:27)।

मिस्री परमेश्वर के लोगों को दु:ख देते थे : मिस्र में एक नया राजा गद्दी पर बैठा जो यूसुफ को नहीं जानता था। उस ने अपनी प्रजा से कहा ''देखो, इस्राएली हम से गिनती और सामर्थ में अधिक बढ़ गये हैं। इसलिये आओ, हम उन के साथ बुद्धिमानी से बर्ताव करें, कहीं ऐसा न हो कि जब वे बहुत बढ़ जायें और यदि संग्राम का समय आ पड़े तो हमारे बैरियों से मिल कर हम से लड़ें और इस देश से निकल जायें।'' इसलिये उन पर बेगारी कराने वालों को नियुक्त किया कि वे उन पर काम का भार डाल कर उन को दु:ख दिया करें। मिस्रियों ने इस्राएलियों से कठोरता के साथ सेवा कराई। शिप्रा और पूआ नामक दो इब्री धाइयों को मिस्र के राजा फिरौन ने आज्ञा दी, जब इब्री स्त्रियों के बेटा उत्पन्न हो तो उसको मार डालना और जब बेटी उत्पन्न हो तो

आत्मिक भोजन

19 जुलाई — **प्रभु के कारण** — **मरकुस 13:12,13**

प्रभु के भक्त ने एक बार ऐसा कहा था ''कि प्रभु यीशु के अनुयायी होने के कारण लोग हमसे घृणा भी करते हैं, और प्रेम भी करते हैं।'' वर्तमान परिपेक्ष्य में यह बात ठीक लगती है। पद 12 एवं 13 के अनुसार मसीहियों को अन्य जातियों के साथ उनके अपने ही लोग सतायेंगे। घर-घर में झगड़े, लड़ाई, हत्यायें एंव विभाजन इस बात के प्रमाण हैं कि प्रभु का आगमन नजदीक है। सर्वोपरि बात यह है कि हम मृत्यु तक इन सतावों एवं अत्याचारों के मध्य स्थिर खड़े रहें। मैदान छोड़कर भागनेवाले को प्रभु से इनाम की आशा नहीं रखनी चाहिये।

प्रार्थना - प्रभु, आपके पीछे चलने या आपके नाम के कारण लोने वाले सताव या उत्पीड़न से कभी ना घबराऊं।

उसे छोड़ देना। मिस्री लोग इस्राएलियों से कठोर व्यवहार करते थे।

2. परमेश्वर के लोगों के साथ दुःख भोगने वाले: इस आयत का दूसरा हिस्सा है कि मूसा को परमेश्वर के लोगों के साथ दुःख भोगना अच्छा लगा। उसने क्या-क्या दुःख उठाये इसको जानने से पहले हम यह जानने की कोशिश करें कि परमेश्वर के लोग कौन थे? वे मिस्र देश में कैसे आये? इन बातों को जानना बहुत आवश्यक है। उन दिनों इस्राएली लोग परमेश्वर के लोग थे। ये लोग इब्राहीम के वंशज थे। "यहोवा ने इब्राहीम से कहा, मैं तुझसे एक बड़ी जाति बनाऊंगा और तुझे आशीष दूंगा और तेरा नाम महान करूंगा और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा और जो तुझे कोसे, उसे मैं श्राप दूंगा और भूमंडल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे" (उत्पत्ति 12:2,3)। परमेश्वर यहोवा ने इब्राहीम से कहा, "यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराये देश में परदेशी हो कर रहेंगे और उस देश के दास हो जाएंगे और वे उनको चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे। फिर जिस देश के वे दास होंगे उसको मैं दंड दूंगा और उसके पश्चात् वे बड़ा धन वहां से लेकर निकल जायेंगे" (उत्पत्ति 15:13,14)। कनान देश में बड़ा भयंकर अकाल पड़ा। लोग मिस्र देश से अन्न लाने लगे। इब्राहीम का पोता याकूब और उसके बेटे भी मिस्र देश से अन्न लाने लगे। मिस्र देश में याकूब का ग्यारहवां पुत्र यूसुफ मिस्र का अधिकारी था। उसने अपने पिता और अपने भाइयों को कनान देश से मिस्र देश में बसाया। 70 जन को देश के रामसेस नामक प्रदेश में यूसुफ ने जमीन देकर बसाया। लेवी के घराने में एक बालक उत्पन्न हुआ। यही बालक मूसा था। इसको जवान होकर, परमेश्वर के लोगों के साथ दुःख उठाना उत्तम लगा। उसने निम्नलिखित दुःख उठाये:-

फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया : लेवी के घराने में एक बालक उत्पन्न हुआ। शिप्रा और पूआ नामक धाइयां। परमेश्वर का भय मानती थीं, इसलिये उन्होंने बेटियों के साथ-साथ बेटों को भी छोड़ दिया। बालक सुन्दर था, तो उन लोगों ने तीन महीने तक छिपा रखा था, जब वह छिपा नहीं सके तो सरकन्डे की टोकरी बना कर उसमें चिकनी मिट्टी और राल लगा कर उस टोकरी में बालक को रख कर, नील नदी के किनारे ऊंची घासों में रख दिया। उस बालक की बड़ी बहन मरियम दूर से देख रही थी। फिरौन की बेटी अपनी सहेलियों के साथ नदी के किनारे टहलने आई। वहां उसने टोकरी देखी उसने अपनी सहेलियों से टोकरी मंगवा कर खुलवायी, तो देखा एक सुन्दर बालक रो रहा था। राजकुमारी को उस पर तरस आया। उसने कहा, "यह तो इब्री बालक है। तब बालक की बहन मरियम राजकुमारी के पास आई और उससे कहा, "क्या मैं जा कर किसी इब्री स्त्रियों में से किसी धाई को तेरे पास बुला लाऊं जो तेरे लिये बालक को दूध पिलाया करें। राजकुमारी ने कहा, "जा ले आ।" मरियम अपनी माँ को बुला लाई। राजकुमारी ने कहा, "तू इस बालक को दूध पिलाया कर, मैं तुझे मजदूरी दिया करूंगी। तब वह स्त्री बालक को अपने घर ले गयी और दूध पिलाया, उसका पालन पोषण किया। जब बालक कुछ बड़ा हुआ तो वह स्त्री बालक को राजकुमारी के पास लाई। वह उसका बेटा ठहरा, राजकुमारी ने उसका नाम मूसा रखा, क्योंकि मैं ने उसे पानी में से निकाला था। "मूसा को मिस्रियों की सारी विद्या पढ़ाई गई और वह वचन और कर्म दोनों में सामर्थी था" (प्रेरितों 7:22)। मूसा चाहता तो परमेश्वर के लोगों को छोड़ कर सांसारिक ऐशो-आराम से राजकुमारी के महल में रहता। परंतु उसने इस सुख को छोड़ा और फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया।" मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इनकार किया" (इब्रा. 11:24)।

मसीह के कारण निंदित होना बड़ा धन है : "उसने (मूसा ने) मसीह के कारण निंदित होने को मिस्र के भंडार से बड़ा धन समझा" (इब्रा. 11:26)। मूसा कई बार इस्राएलियों से निंदित हुआ। जब इस्राएली लाल समुद्र के किनारे पहुंचे और मिस्री सेना पीछे से आई तो इस्राएली मूसा से कहने लगे, "क्या मिस्र में कब्रें न थीं जो तू हम को वहां से मरने के लिये जंगल में ले आया है? तू ने हम से यह क्या किया कि हम को मिस्र से निकाल लाया। क्या हम तुझ से मिस्र में यही बात न कहते रहे कि हमें रहने दे कि हम मिस्रियों की सेवा करें? हमारे लिये जंगल में मरने की अपेक्षा मिस्रियों की सेवा करना अच्छा था" (निर्गमन 14:11,12)। जब सीन नामक जंगल में इस्राएली पहुंचे तो सारी मंडली हारून और मूसा से कहने लगे, "जब हम मिस्र देश में मांस की हांडियों के पास बैठ कर मनमाना भोजन करते थे, तब यदि हम यहोवा के हाथ से मार डाले भी जाते तो उत्तम वही था,

आत्मिक भोजन

20 जुलाई | **सुगंधित इत्र** | **मरकुस 14:3-5**

बैतनिय्याह नगर में यीशु के अभिषेक की कहानी एक दृष्टांत की तरह है। जैसे प्रभु ने हम सबों को सुगंधित इत्र का पात्र दिया है। अर्थात् वरदान, ज्ञान, योग्यता संपत्ति इत्यादि। यदि हम इनका उपयोग अपने लिये करते हैं तो इससे कुछ लाभ नहीं लेकिन यदि हम इन्हें यीशु के चरणों में डालते हैं तो वे सभी चीजों को परमेश्वर की महिमा तथा दूसरों के लाभ और कल्याण हेतु उपयोग में ला सकते हैं।

प्रार्थना - हे प्रभु, संगमरमर के उस पात्र की तरह तोड़ा जाकर आपकी महिमा एवं दूसरों की भलाई के लिये काम में लाया जा सकूं।

पर तुम हमको इस जंगल में इसलिये निकाल ले आये हो कि इस सारे समाज को भूखों मार डालो'' (निर्ग. 16:3)। उसकी (मूसा की) आंखें अनदेखा फल पाने की ओर लगी थी। इसलिये वह मसीह के लिये निंदित होने के लिये तैयार था।

हर युग में परमेश्वर के लोग दु:ख उठायेंगे। हम सोचते हैं कि पुराने समय में या प्रभु यीशु के समय में लोगों ने बहुत दु:ख उठाया। हर युग में परमेश्वर के लोगों को दु:ख उठाना है। ''पर जितने मसीह यीशु में भक्ति का जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताये जायेंगे'' (2 तिमु. 3:12)। शैतान नहीं चाहता कि हम प्रभु यीशु मसीह को अपनायें। इसलिये वह मनुष्य को दु:ख देता है। हम को परमेश्वर के प्रेम से कोई अलग नहीं कर सकता है। ''कौन हम को परमेश्वर के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव या अकाल या नंगाई या जोखिम या तलवार?'' (रोम. 8:35)।

इस संसार में हम थोड़े समय के लिये हैं। ''क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है।'' यदि हम प्रभु यीशु के लिये कष्ट उठायेंगे तो वह थोड़े समय का है पर अंत में हमें ईनाम मिलेगा।

हम सोचें और फैसला लें कि हमारा चुनाव मूसा की तरह है? यदि हाँ, तो प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं कहा, ''वे क्लेश देने के लिये तुम्हें पकडवायेंगे और तुम्हें मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर रखेंगे तब बहुत से ठोकर खायेंगे और एक दूसरे को पकड़वायेंगे और एक दूसरे से बैर रखेंगे। अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठंडा पड़ जायेगा। परंतु जो अंत तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा'' (मत्ती 24:9-13)। ❑

लिडिया जौन
नई दिल्ली

सूचना

प्रिय पाठको,

'मसीही आह्वान' पत्रिका की ओर से आपके निरंतर प्रेम और सहयोग के लिए धन्यवाद !

आपको सूचित किया जाता है कि समयानुसार पत्रिका प्रकाशन के खर्च को ध्यान में रखते हुए अगले अप्रैल माह 2017 से सदस्यता, नवीनीकरण एवं विज्ञापन सहयोग राशि में कुछ परिवर्तन किया जा रहा है।

आशा है कि आप सभी इसमें हमारी सहायता करेंगे।

नई राशि की जानकारी इस प्रकार है :-

एक प्रति	–	20/–
वार्षिक सदस्यता	–	200/–
6 वर्षों के लिए	–	1000/–

विज्ञापन		Full Page	Half Page	Qtr. Page
Last Cover Page	:	2000	1000	500
Inside Cover Page	:	2000	1000	500
Inside Page	:	1000	500	300

संपादन समिति
'मसीही आह्वान'

आत्मिक भोजन

21 जुलाई **धर्म और न्याय** **नीतिवचन 21:1-3**

वर्तमान में हर तरफ भ्रष्टाचार, लूट-खसोट, हत्या, लड़ाई और झगड़े दिखाई पड़ते हैं। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि हम अधर्म एवं अन्याय को यूं ही बहने दें या फिर हम धर्म और न्याय के लिये खड़े हों। आज यदि हम धर्म एवं न्याय के रक्षक हैं तो यह परमेश्वर की दृष्टि में सर्वथा उचित एवं ग्रहणयोग्य है।

प्रार्थना - हे प्रभु, धर्म और न्याय के लिये साहसिक कदम उठाने में आप सहायक हों।

दाख की बारी का गीत

(यशायाह 5:16)

जब मैं बाइबल के इस भाग को पढ़ रही थी तो मैं ने कुछ विचार करना चाहा और चाहती हूं कि आप भी विचार करें।

बाइबल के इस भाग के शीर्षक में लिखा है दाख की बारी का गीत, जब आप इस खंड को पढ़ेंगे तो पाएंगे कि यह गीत अपने साथ खुशी (वचन 1-3) और दु:ख (वचन 5,6) दोनों छुपाए हुए है। ऐसा नहीं है कि हम सिर्फ खुशी में ही गीत गाते हैं। यह तो सारा संसार जानता है कि जब हम खुश होते हैं तो गीत गाते हैं और भी बहुत कुछ करते हैं। दोस्तों को बुलाते हैं, खाना-पीना करते हैं नाच-गान करते हैं इत्यादि। लेकिन जब हम दु:ख में होते हैं या हमारा मन उदास होता है तो हम किस प्रकार गा सकते हैं! हमारी आंखों में आंसू होता है, हमारा मन व्याकुल होता है, हमारे अंदर तूफान उठ रहा होता है, तो हम किस प्रकार गीत गा सकते हैं! मैं आप से पूछना चाहती हूं कि आपने कभी अपने दु:ख के समय में गीत गाया है? मेरे ख्याल से बहुतों का जवाब होगा-जी नहीं। हां, लेकिन हमारे मसीह समुदाय में हम एक बार दु:ख में भी गीत गाते हैं और वो है किसी के इस दुनिया से जाने पर; जब हम किसी को कब्र में मिट्टी देते हैं तो हम गीत गाते हैं। फिर भी यह नहीं कह सकते कि जिनके घर में यह होता है या जिन के साथ यह गुजरता है वे अपने दुख के इस समय में गीत गा सकते हैं।

यह हम इसलिए करते हैं क्योंकि हम परमेश्वर पिता को उनके जीवन के लिए धन्यवाद देते हैं और धन्यवाद देते हैं उनके इस दु:ख भरे संसार से मुक्ति के लिए। इन वचनों में परमेश्वर पिता हमें बहुत सहजता से यह बता रहे हैं कि किस तरह हमारी खुशी या आनन्द दु:ख में बदल जाते हैं। बाइबल पवित्रात्मा की अगुवाई में लिखा गया है, इसका मतलब यह है कि परमेश्वर इस बात को भली भांति समझते हैं कि खुशी के पल का दु:ख में बदलना क्या होता है। उत्पत्ति 1:26 पद में हमें मिलता है कि परमेश्वर ने हमें अपने स्वरूप और समानता में बनाया है। तो हम भी उस परिस्थिति से गुजर सकते हैं। हम शायद अपनी खुशी में परमेश्वर को भूल सकते हैं लेकिन हम कभी भी दु:ख के पल में उनको नहीं भूलते क्योंकि उस समय हमें उन से बहुत सारे सवाल करने होते हैं-क्यों प्रभु, कैसे प्रभु, कब प्रभु मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ? मैं तो हमेशा आपके कार्यों में लगी रहती हूं, दान देती हूं, उपवास करती हूं इत्यादि। न जाने कितने सवाल करते हैं और भला बुरा कहते हैं, नाराज भी हो जाते हैं।

इस खंड में हम देखते हैं कि यहोवा परमेश्वर ने एक योजना बनाई है, एक पौधा रोपने की, जिसके लिए उसने अच्छी जगह का चुनाव किया है। अच्छी उपजाऊ भूमि को खोजा है। गढ़ा खोदा है। मिट्टी की सफाई की है सारे पत्थर को चुन कर हटाये हैं। उन्नत किस्म का पौधा लिया है, मिट्टी में खाद मिलाया, सारा कुछ करने के बाद उस पौधे को जमीन में लगाया और अंत में उसमें पानी पटाया है। परमेश्वर ने बिलकुल उसी प्रकार सब कुछ किया जिस प्रकार हम भी करते हैं। जब हम कोई भी पौधा लगाना चाहते हैं। यह सब करते हुए हमारा मन बहुत आनन्दित होता है और जब हम उस को लगाते हैं तो उस पौधे के बड़े होने पर पत्ता, फल या फूल की आशा लगाए रहते हैं। बच्चों में इस बात का उत्साह हम ज्यादा देखते हैं। हर रोज वे उस पौधे के पास जाते हैं और चाहते हैं कि वह जल्दी से बड़ा हो जाय। हम सब का ऐसा कोई अनुभव रहा होगा। पौधे को लेकर बहुत सारे सपने देखने लगते हैं। वह जब बड़ा होगा तब उसमें ऐसे फूल होंगे, वह ऐसा दिखेगा या फल होगा तो या पेड़ कितना अच्छा लगेगा और फल जब पक जाएगा तब हम उस फल को किन लोगों में बांटेंगे और किस को नहीं देंगे। सब कुछ हमारे मन में चलता है जबकि अभी हमने उसे लगाया ही है। जब उसमें हम थोड़ा सा भी नया कुछ बदलाव देखते हैं हम उत्साहित हो जाते हैं बहुत खुश हो जाते हैं सब को दिखाते हैं बताते हैं कि देखो ये पौधा जो मैं ने लगाया है उसमें नया पत्ता आने वाला है या नयी कली निकलने वाली है।

प्रभु की ये दाख की बारी या वह पौधा जो हम बहुत चुनाव कर के लाते हैं। हम सब हैं और हर एक मनुष्य जो यह बात जानता है कि प्रभु उससे प्रेम करते हैं और उसने हमारे लिए अपना प्राण दिया और अपने लहू से हमें मोल लिया है। जिस तरह हम पौधे को लगाने की तैयारी करते हैं उसी तरह उसने हमें चुना और जगह तैयार किया और सफाई करके हमें लगाया है। आज हम जहां भी पाये जाते हैं यह प्रभु की योजना का अंश है। आज जहां हम रहते हैं, जिस स्कूल में जाते हैं, जो नौकरी करते

आत्मिक भोजन

22 जुलाई | **अच्छा नाम** | **सभोपदेशक 7:1**

जो लम्बी उम्र तक जीता है लोग उसे भाग्यशाली एवं आशीषित व्यक्ति कहते हैं, लेकिन लम्बी उम्र तक जीवित रहने से महत्वपूर्ण बात है कि हम कैसे जीवित रहते हैं? राजा सुलेमान इन पदों के द्वारा अच्छे नाम, सम्मानित नाम एवं आशीषित नाम के मूल्य से हमें अवगत कराता है। इसलिये हम अच्छा नाम परमेश्वर का भय मानकर, उसकी आज्ञा मानकर एवं उसकी इच्छानुसार चलकर ही पा सके हैं। अच्छा काम करके ही आप, अच्छा नाम कमा सकते हैं सम्मानित एवं आशीषित नाम पा सकते हैं।

प्रार्थना - प्रभु, बुरा नहीं लेकिन धर्म के काम करके अच्छा नाम, सम्मानित एवं आशीषित नाम प्राप्त कर सकूं।

हैं, जहां विवाह हुआ है, जो पति दिया गया है, जैसे ससुराल वाले हैं, जैसे बच्चे हैं, सब कुछ परमेश्वर ने हमें अपनी योजना के अनुसार प्रदान किया है क्योंकि उनके पास हर एक के लिए योजना है। सोचिए कि हम जब एक पौधा लगाते हैं तो हमारे पास कितनी सारी योजनाएं होती हैं। तो यह सोचिए कि जिसे प्रभु ने अपने लहू के बदले मोल लिया है, उनके लिए उसके पास कितनी सारी योजनाएं हैं। यिर्मयाह 29:11 इस वचन को हम सब जानते हैं। परमेश्वर कहते हैं ''जो कल्पनाएं मैं तुम्हारे विषय में करता हूं उन्हें मैं जानता हूं वे हानि की नहीं वरन् भलाई ही की है और अंत में तुम्हारी आशा पूरी करूंगा।'' प्रभु ने हमें जहां भी रखा है उसके पास हमारे लिए हमारे उस अनचाहे परिस्थिति में भी योजना है और वह चाहते हैं कि हम उनका गुणगान करें, उनकी महिमा हमारे द्वारा हो। हमारे हिसाब से हम शायद गलत जगह में हैं। बहुत बार हम कहते हैं मुझे तो यहां नहीं होना चाहिए था, लेकिन क्या करें मां-बाबा को यही चाहिए था। या मेरे पति की यही इच्छा थी या बच्चों के कारण यह करना मेरी मजबूरी है इत्यादि।

उत्पति 1:28 में परमेश्वर ने आदम और हव्वा को आशीष दी और कहा, फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ, उसको अपने वश में कर लो, और जीव-जन्तु और पशु-पक्षियों पर अपना अधिकार रखो। प्रभु ने पौधा रोपा और यही आशीष दी की जो पृथ्वी उस ने बनायी है उसका हम भरपूर आनन्द उठाएं और उसको अपने अधिकार में कर लें। परमेश्वर चाहते हैं कि हम जिस जगह में हैं वहां प्रभु की महिमा करें। परमेश्वर के लिए लोगों को आगे लेकर आएं, उनके राज का प्रचार करें, हम अपने दायरा को प्रभु के लिए बढ़ाएं। जिस काम को करना है उसे प्रभु की महिमा के लिए करें। आज हम अपने माता-पिता का अपमान करते हैं उनका कहना नहीं मानते हैं। आज इतनी जल्दी में रहते हैं कि हम से घर के लोग कुछ भी कहते हैं, हम सुनते नहीं। हम से सवाल कुछ किया जाता है और हम जवाब कुछ और देते हैं। बोल-चाल की भाषा में कहें तो टेढ़ा जवाब देते हैं। हम किसी से सीधे मुंह बात नहीं करते हैं। आज हमारे जीवन में मोबाइल, कम्प्यूटर, इंटरनेट, टी.वी. हमारे परिवार के सदस्य बन गए हैं। हम कभी साथ में बैठ नहीं पाते और जब समय मिलता भी है तो सब अपने मोबाइल में व्यस्त होते हैं। सब कुछ होने के बाद भी हम अपने माता-पिता को आज वृद्धा आश्रम भेज देते हैं। बुढ़ापे में जिस देखभाल की उन्हें जरूरत है क्या हम उनको वो देते हैं। जिस प्यार का वे हक रखते हैं क्या उन्हें वह मिल पाता है?

प्रभु के द्वारा दिए गए आनन्द का हमारे लिए क्या कोई मतलब है। आज हम क्षण भर के आनन्द को अधिक महत्व देने लग गए हैं, आज हम और आप प्रभु के आशीषों का आनन्द नहीं उठा रहे हैं। क्या हम उस नये रोपे गए पौधे की तरह बढ़ पा रहे हैं, क्या हम जो प्रभु चाहते हैं कि हम सब चीजों का लाभ उठाते हुए उसका गुणगान कर रहे हैं क्या उसकी इच्छा पूरी कर रहे हैं? जिस सोच से प्रभु ने हमें सृजा है क्या आज के दिन हम उस सोच को पूरा कर रहे हैं। जैसा हमें सुसमाचार में मिलता है। मत्ती 13:8, मरकुस 4:8, लूका 8:8 कि जो बीज अच्छी भूमि पर गिरा वह बहुत गुणा फल लाया। क्या हम जो अच्छी भूमि में रोपे गए हैं वैसा फल ला रहे हैं? यही तो परमेश्वर के द्वारा गाया गया दु:ख का गीत है कि मुझे अच्छा फल नहीं मिला। क्यों? क्या मैं ने पौधा रोपने में कोई गलती की या कुछ कमी रह गयी? क्यों जो पौधा मैं ने लगाया वह फूलों से नहीं लदा या फलों से नहीं लदा? जिस प्रकार यीशु मसीह अंजीर के पेड़ के पास पूरे विश्वास के साथ आए थे कि निश्चय मुझे इस में फल मिलेगा परंतु क्या हुआ उनकी आशाओं पर पानी फिर गया (मत्ती 21:19, मरकुस 11:13)।

परमेश्वर ने जो दु:ख का गीत गाया क्या वह गलत है कि अब मैं उसे उखाड़ दूंगा, उनके लिए जो घेरा मैं ने लगाया उसे नष्ट कर दूंगा। मैं उनमें पानी नहीं डालूंगा, मेरा प्यार उनके लिए जाता रहा, किस बात में मैं ने कमी की कि मुझे इस बात की सजा मिली? मैंने तो बस प्यार किया था और चाहता था कि वह अच्छे से फले-फूले और मुझ में बना रहे। क्या हम भी अपने पौधे के साथ यही नहीं करते हैं। हमारे मन में भी क्या यही विचार नहीं उठता है? क्या हम यह चाहते हैं कि वह हम से सवाल करें कि मैं ने तुम को क्या पति या पत्नी नहीं दिया। आराधनालय में सिर्फ अकेले क्यों? अच्छा परिवार दिया। फिर पारिवारिक प्रार्थना नहीं, क्यों? अच्छी नौकरी दी। फिर तुम ने पूरी ईमानदारी के साथ दसमांस नहीं दिया, क्यों? धन-दौलत दिया। तुमने जरूरतमंदों की सेवा नहीं की, क्यों? सुख-सुविधा प्रदान किया। फिर भी मेरा धन्यवाद नहीं किया, क्यों? कोई मुझ पर विश्वास करने वाला नहीं, मुझ से प्यार करने वाला नहीं, मुझे समय देने वाला नहीं, मेरी महिमा करने वाला नहीं, मेरे कामों को

आत्मिक भोजन

23 जुलाई **गरीब पर दया** **सभोपदेशक 11:1,2**

आज सरकार कहती है कि एक रोटी बनाओ आधी तुम खाओ, आधी दूसरे को खिलाओ। यह बात इस सन्दर्भ में है कि हम अपनी सम्पत्ति, अपने धन एवं रोटी को गरीबों के साथ बांटें। यदि हमारे पास खाने के लिए रोटी है, तो दूसरों को भी भूखा ना रहने दें। हमें इस बात को स्मरण रखना होगा कि उदारता का ईनाम या पुरस्कार समय पर प्राप्त होता ही है।

प्रार्थना - हे प्रभु, अपनी रोटी को गरीब, भूखे, अपाहिज एवं मोहजात लोगों के साथ बांटना ना भूलूं।

आगे बढ़ाने वाला नहीं, दान देने वाला नहीं, मेरे लोगों के लिए प्रार्थना करने वाला नहीं। हम सब अपने मन में यह सोच रहे हों कि ऐसा नहीं, कभी-कभी ऐसा हो जाता है तो वचन पढ़ें। यशायाह 59:16 में हमें मिलता है कि यहोवा परमेश्वर ने देखा कि कोई भी पुरुष नहीं और इस से अचम्भा किया कि कोई विनती करने वाला नहीं।

इतना सब झेलने के बाद क्या प्रभु का सवाल करना सही नहीं कि मैं तुम्हारे साथ क्या करूं? क्या हम भी ऐसा ही कुछ सवाल नहीं करते? जिस तरह इस खंड में परमेश्वर भी सवाल (वचन-4) कर रहे हैं कि तुम अब न्याय करो कि उनके साथ क्या किया जाए? यूहन्ना 15:6 में मिलता है कि जो नहीं फलता वह आग में झोंका जाएगा। क्या हम अपने जीवन में प्रभु के इस प्रकार के न्याय के लिए तैयार हैं, क्या आप अपने जीवन में प्रभु की आशीषों को खो कर उससे दूर होने के लिए तैयार हैं। उत्त्पति 3:11 पद में मिलता है कि प्रभु आदम और हवा से सवाल कर रहे हैं कि क्या तुम ने उस फल को खाया है? कितना दु:ख हुआ होगा परमेश्वर को जब उनको यह पता चला होगा कि आदम और हवा ने वह काम किया जिसको करने के लिए उसने मना किया था और ऐसी क्या कमी थी अदन की वाटिका में कि उनको वह फल खाने की जरूरत पड़ी, सब कुछ करने के बाद वे मेरी एक आज्ञा का मान नहीं रख पाए। अब परमेश्वर के पास यही सवाल था कि मैं उनका क्या करूं? और हम सब जानते हैं कि उसके बाद क्या हुआ। निर्गमन 20:5 में हमें मिलता है कि वह जलन रखने वाला परमेश्वर है। और पितरों का दण्ड, परपोतों को भी देता है।

अब उत्साहित हो जाएं, हल्लेलूयाह, परमेश्वर का धन्यवाद हो, क्योंकि यह अभी तक सिर्फ एक सवाल है और उसका जवाब प्रभु अभी नहीं ढूंढ़ना चाहते। भजन संहिता में हमें बहुत वचनों में मिलता है कि वह विलम्ब से कोप करने वाले करुणानिधान हैं, वह थोड़ा वक्त लेना चाहते हैं। अभी थोड़ा वक्त हमारे पास बाकी है कि हम संभल जाएं और जो पौधा रोपने के समय रोपने वाले की जो इच्छा होती है उसे समझ जाएं और वैसा ही आचरण करें, व्यवहार करें, काम करें। प्रभु के द्वारा बनाये गए हर एक जन का आदर करें। प्रभु की सृष्टि का आदर करें, प्रभु को अधिक से अधिक समय दें। उसकी आराधना स्तुति करें, उसके कामों को करें और विशेष कर उन कामों से दूर रहें जो हमें नहीं करने का आदेश दिया गया है। बेशक, अपने से हम कुछ नहीं कर सकते लेकिन प्रभु का धन्यवाद हो उसकी दया, करुणा और अनुग्रह हमारे लिए हमेशा बहती रहती है और जब हम उसे चाहते हैं ले सकते हैं। 1 कुरिन्थियों 12:3 में मिलता है कि कोई पवित्र आत्मा के बिना नहीं कह सकता है कि यीशु प्रभु है। तो जो कुछ भी हमें करना है वह हम बिना त्रिएक परमेश्वर के नहीं कर सकते हैं।

आइए हम आत्मचिन्तन करें कि हम क्या कर रहे हैं, क्या प्रभु ने जिस काम के लिए हमें बनाया है क्या उस काम को हम पूरा कर रहे हैं। क्या जैसा पेड़ प्रभु चाहते हैं हम वैसा बन पाये हैं? हमें चाहिए कि हम पवित्रात्मा के फलों से लदे पेड़ बनें, पवित्रात्मा के दान हम में पाये जाएं। परमेश्वर हम सबों की सहायता करें। ❑

बिमला राय
रांची, झारखण्ड

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की चन्द लाईनें जो हमें जीवन में हमेशा याद रखनी चाहिए। और हो सके तो उस पर अमल भी करना चाहिये।

- ईश्वर से कुछ मांगने पर न मिले तो उससे नाराज न होना क्योंकि ईश्वर वह नहीं देता जो आपको अच्छा लगता है बल्कि वह देता है जो आपके लिए अच्छा होता है।
- जिंदगी में कभी भी किसी को बेकार मत समझना, क्योंकि बंद पड़ी घड़ी भी दिन में दो बार सही समय बताती है।
- एक देश को भ्रष्टाचार से मुक्त होने और एक खुशमिजाज लोगों का देश बनाने के लिए समाज में तीन तरह के लोगों का अहम किरदार होता है। वे हैं : पिता, माता और शिक्षक।

वचन में और अधिक बढ़ने के लिए आप ''दैनिक भोजन'' भी मंगवा सकते हैं।

आत्मिक भोजन

24 जुलाई **सृजनहार का स्मरण** **सभोपदेशक 12:1**

युवा अवस्था जीवन की सबसे अच्छी अवस्था होती है, जब जवान जोश, ताकत, बुद्धि, ज्ञान एवं उम्मीदों से भरे होते हैं, लेकिन यह एक ऐसी अवस्था है, जब जवान जवानी के नशे में गलत रास्ते पर चल पड़ते हैं। अपराध की दुनिया में इसी अवस्था में शैतान उसे प्रवेश करा देता है। इसलिये उसे अपने सृजनहार को कभी नहीं भूलना चाहिये।

प्रार्थना - हे प्रभु, ना केवल जवान पर हम सभी आपको स्मरण रखें, आपको कभी ना भूलें।

प्रभु यीशु मेरे उद्धारकर्ता हैं

हमारा यह संसार पाप के प्रभाव में पड़ा है। पाप के कारण पतितावस्था में पड़ी इस दुनिया में परमेश्वर का वचन गुड बुक्स एजुकेशनल ट्रस्ट के द्वारा दस भाषाओं में रेडियो कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों के बीच पहुंचाया जा रहा है। इन रेडियो कार्यक्रमों में से एक गढ़वाली भाषा का कार्यक्रम ''आशा कू रैबार'' है। इस कार्यक्रम को उत्तराखण्ड और आस-पास के क्षेत्रों में रहने वाले गढ़वाली भाषी लोग सुन कर परमेश्वर की आशिष प्राप्त कर रहे हैं।

कार्यक्रम सुनने के बाद इसके श्रोतागण वक्ता भाई राजेश मैन्सल और उनके टीम के सदस्यों से मोबाइल या ई-मेल द्वारा सम्पर्क करते हैं और अपने जीवन में परमेश्वर द्वारा प्राप्त उद्धार और चंगाई की गवाहियां देते हैं।

पिछले महीने 6 मई 2017 को 16 लोगों ने प्रभु यीशु को अपना मुक्तिदाता स्वीकार किया और गढ़वाली भाषा के प्रार्थना समूह में जुड़ गए। वे सभी नए विश्वासी प्रार्थना समूह में परमेश्वर की बुनियादी शिक्षा प्राप्त कर आत्मिकता के मार्ग में आगे बढ़ रहे हैं।

उन्हीं में से एक विश्वासी श्री आशु हैं, जो गैर-मसीही परिवार से हैं। पहले तो वे परमेश्वर के छुटकारा देने वाले प्रेम से अनजान थे, मगर अब उन्होंने प्रभु यीशु को अपने जीवन का व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार कर लिया है। कुछ महीने पहले श्री आशु के जीवन में शान्ति नहीं थी। उनके मन में चैन नहीं था। उस बेचैनी के कारण वे रात में सो नहीं पाते थे। नींद नहीं पूरी होने के कारण श्री आशु के स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ गया था और उनके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ रहा था।

श्री आशु के परिवार के लोग इलाज के लिए उनको कई भूत सिद्धि करने वालों और टोन्हों के पास ले कर गए। उन्होंने उनको ठीक करने के लिए अपने तंत्र-मंत्र आजमाया और उन्हें झाड़ू एवं डण्डे से खूब पीटा। झाड़ू और डण्डों की मार से श्री आशु चिल्ला उठते। इन सब के बावजूद उनकी परेशानी कम नहीं हुई।

एक दिन श्री आशु के परिवार के लोगों को किसी ने भाई राजेश मैन्सल और उनके प्रार्थना समूह के बारे में बताया। उसने उन्हें कहा कि उस प्रार्थना समूह में जाकर उनकी सारी समस्याएं अवश्य दूर हो जाएंगी।

पहले तो श्री आशु वहां जाने से डर रहे थे, क्योंकि उनको लग रहा था कि वहां जाने पर भाई राजेश भी उनको डण्डों से पीटेंगे। फिर भी, अपने हृदय में डर लिए न चाहते हुए भी श्री आशु अपने परिवार के लोगों के साथ वहां गए। जब वे वहां पहुंचे उस समय भाई राजेश प्रभु यीशु के चंगाई की सामर्थ के बारे में सन्देश दे रहे थे। सन्देश देने के बाद उन्होंने बीमार लोगों के लिए विशेष प्रार्थना किया। श्री आशु के लिए भी प्रार्थना हुई। प्रार्थना के समय श्री आशु ने परमेश्वर की अद्भुत शान्ति का अनुभव अपने मन और हृदय में किया। वैसी शान्ति का अनुभव उन्होंने पहले कभी नहीं किया था, जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। उसी समय उन्होंने महसूस किया कि उनके अन्दर से सारी बेचैनी और घबराहट दूर हो गए। प्रभु यीशु ने उन्हें पूर्ण चंगाई दे दी। यह सब श्री आशु और उनके परिवार के लिए बहुत ही आश्चर्य की बात थी। उनको ऐसा लग रहा था कि उनके अन्दर से सारी चिन्ताएं और परेशानियां समाप्त हो गई थीं। उसी दिन उन्होंने अपना जीवन प्रभु यीशु को सौंप दिया। आज वे परमेश्वर की सन्तान हैं।

श्री आशु गवाही देते हैं, ''अपने जीवन में चंगाई के आश्चर्यकर्म को देख कर मेरा विश्वास प्रभु यीशु पर और अधिक बढ़ गया है। अब मैं विश्वास करता हूं कि प्रभु यीशु ही मेरे उद्धारकर्ता और प्रभु हैं। मेरे हृदय में यह दृढ़ विश्वास है कि वही सच्चे परमेश्वर हैं, जिन पर मैं अपना सम्पूर्ण भरोसा रख सकता हूं। मेरी इच्छा है कि मैं जीवन भर परमेश्वर की सेवा करूं और उनके पवित्र वचन के अनुसार जीऊं।''

मैं हर दिन बड़े ध्यानपूर्वक आपका कार्यक्रम सुनता और सीखता हूं। परमेश्वर के वचन से मुझे प्रतिदिन के जीवन में आगे बढ़ने की शक्ति मिलती है।''

आत्मिक भोजन

25 जुलाई | **सुनना और करना** | **याकूब 1:19**

एक आम कहावत है ''जो अपने भाई की सुनना छोड़ देता है वह परमेश्वर की भी सुनना जल्दी ही छोड़ देगा।'' वचन के प्रकाश में हम इस बात पर ध्यान दें कि क्या हम परमेश्वर की आवाज, उन का वचन और आपस में एक दूसरे की सुनने के लिये तैयार हैं? हम क्रोध करने में धीमे हों एवं परमेश्वर के वचन के महज सुनने वाले ही नहीं लेकिन उसके अनुसार चलने वाले भी बनें।
प्रार्थना - हे प्रभु, आपकी एवं अपने भाई की भी सुननेवाले हम बनें।

विज्ञान जगत

• आंख की पुतली से खुलनेवाले लॉक को धोखा देना संभव : सैमसंग के नए स्मार्टफोन गैलेक्सी एस 8 में इस्तेमाल होने वाली 'आईरिस स्कैनिंग तकनीक' यानी आंख की पुतली को देखकर खुलने वाले लॉक की तकनीक को धोखा देना संभव है। तस्वीर का कॉन्टैक्ट लैंस से सैमसंग की सुरक्षा तकनीक को धोखा दिया जा सकता है। मदरबोर्ड नाम की वेबसाइट के मुताबिक केयोस कंप्यूटर क्लब के शोधकर्ताओं ने आंख की एक तस्वीर से ये कर दिखाया है। सैमसंग के गैलेक्सी एस 8 के लॉक को खोलने के लिए आईरिस स्कैनर में देखना भर काफी होता है, सैमसंग का दावा है कि आईरिस स्कैनर एक जबरदस्त सुरक्षा तकनीक है। बीबीसी से सैमसंग ने कहा है कि कंपनी को इस मामले के बारे में जानकारी है। सैमसंग ने पिछले महीने ही अपना नया फोन गैलेक्सी एस 8 और एस 8 प्लस लांच किया है। शोधकर्ताओं ने पहले एस 8 के आईरिस स्कैनर में एक व्यक्ति की आंख का रजिस्ट्रेशन कर फोन की सुरक्षा को स्थापित किया। फिर एक डिजिटल कैमरा में इंफ्रा-रेड नाइट विजन सेटिंग के जरिए एक अन्य व्यक्ति की आंख की तस्वीर ले ली। इस तस्वीर का प्रिंट लेकर शोधकर्ताओं ने इसके आगे कॉन्टैक्ट लेन्स रखा। शोधकर्ताओं की एक टीम ने एस 8 स्मार्टफोन के सामने इस तस्वीर को रखकर अनलॉक करने का एक वीडियो भी इंटरनेट पर जारी किया है। सैमसंग का दावा है कि आईरिस स्कैनिंग तकनीक का सुरक्षा के लिहाज से कड़ा परीक्षण किया गया है।

कंपनी की तरफ से कहा गया है कि ''अगर इस तकनीक में कोई कमजोरी है या फिर इसे चुनौती देने का कोई नया तरीका है तो कंपनी एस 8 की सुरक्षा को पुख्ता करने के लिए जल्द से जल्द कदम उठाएगी'' सुरक्षा विशेषज्ञ केन मुनरो का कहना है कि इससे साफ हो जाता है कि बायोमैट्रिक्स गंभीर समस्याओं का आसान सा हल नहीं है। वो कहते हैं, ''अगर आप वाकई सुरक्षित होना चाहते हैं तो फिंगर प्रिंट और एक गोपनीय नंबर चुनिए। अगर आप आईरिस लॉक इस्तेमाल करना चाहते हैं तो अपनी आंखों को बंद करके चलिए ताकि कोई आपकी आंखों की पुतली की तस्वीर न खींच ले'' गैलेक्सी एस 8 में आईरिस स्कैनर की जगह पासवर्ड या गोपनीय नंबर का भी विकल्प दिया गया है।

• आपके व्हॉट्सएप डेटा का इस तरह इस्तेमाल कर रहा है फेसबुक : पिछले साल अगस्त में व्हॉट्सएप ने अपने यूजर्स के फोन नंबर फेसबुक से साझा करने का ऐलान करके सबको चौंका दिया था। 2014 में फेसबुक ने व्हॉट्सएप को खरीद लिया था। उसके बाद ये पहली बार है कि व्हॉट्सएप ने अपनी प्राईवेसी पॉलिसी में बदलाव किया। इसका साफ मतलब था कि विज्ञापन बढ़ेंगे और प्राइवेसी घटेगी। तकनीकी मामलों की कंसल्टेंसी कंपनी ओवम की पामेला क्लार्क डिक्सन ने बीबीसी से कहा कि व्हॉट्सएप के कई यूजर्स इससे ठगा हुआ महसूस कर रहे थे। यूरोपीय आयोग ने इस बात पर सहमति जताते हुए फेसबुक पर व्हॉट्सएप को खरीदते वक्त गलत जानकारी देने के मामले में एक करोड़ 20 लाख डॉलर का जुर्माना लगाया है।

ये पहली बार है कि यूरोपीय आयोग ने मर्जर के दौरान झूठ बोलने के कारण किसी कंपनी पर कार्रवाई की है। 'यूरोपियन कमिशनर फॉर कंपटीशन' मार्गरेटे वेस्टेयर ने कहा कि जुर्माना सही है। और इससे सही संदेश भी जाएगा। फेसबुक ने वादा किया था कि वह अपने और व्हॉट्सएप के खातों को नहीं जोड़ेगा, लेकिन वह इस पर कायम नहीं रहा। हालांकि फेसबुक के प्रवक्ता ने कहा है कि कंपनी ने अच्छी भावना से काम किया और हर बार सही जानकारी देने की कोशिश की।

फेसबुक को अपना नंबर क्यों चाहिए? एक जवाब ये हो सकता है कि फेसबुक आपको उन लोगों को फ्रेंड बनाने की सलाह दे सके जिनके साथ आप फोन पर तो जुड़े हैं लेकिन सोशल नेटवर्क के जरिए नहीं। अगर अभी तक ऐसा नहीं हुआ है तो चौंकिएगा नहीं, अगर कभी फेसबुक पर दोस्ती के सुझावों में आपको वो पड़ोसी दिखे, जिसका कभी काम पड़ने पर आपने नंबर लिया था। या वो प्लंबर दिखे, जिसने व्हॉट्सएप पर घर आने का समय पूछा हों। हां, उन्हें फेसबुक पर फ्रेंड बनाना है या नहीं, यह फैसला आप ही करेंगे।

विज्ञापनों का खेल - यह तो सभी देखते हैं कि फेसबुक पर दिखने वाले विज्ञापन हर यूजर के मुताबिक पर्सनलाइज किए होते हैं। गूगल पर आज जो सर्च करेंगे, फेसबुक उससे जुड़े विज्ञापन आपको दिखाना शुरू कर देगा और इसका फायदा ब्रांड उठाते हैं। वे अलग-अलग उम्र, रुचियों, शहरों और कई अन्य जानकारियों के मुताबिक कैटेगरी में बंटे यूजर्स के लिए विज्ञापन भेजते हैं। लेकिन इसके लिए व्हॉट्सएप से आपकी जो जानकारी फेसबुक को मिल रही है उसका भी इस्तेमाल किया जा सकता है। फेसबुक ने व्हॉट्सएप को खरीदा था तब कहा था, ''हम विज्ञापन और उत्पादों को लेकर अनुभवों को बेहतर बनाना चाहते हैं। ''एक ब्लॉग में कंपनी ने कहा था कि फेसबुक सिस्टम से आपके नंबर को जोड़कर हम आपको आपके अनुरूप विज्ञापन दिखाना चाहते हैं।''

आत्मिक भोजन

26 जुलाई — **कर्मों का फल** — **नीतिवचन 11:30,31**

आज आमतौर पर हम उपद्रवी एवं दुष्ट व्यक्ति को दण्डित होते नहीं देखते। शायद यह हमारे लिये निराशा या कुढ़न की बात हो सकती है लेकिन देर सवेर इसी संसार में धर्मी और दुष्ट को उनके कामों का प्रतिफल मिल जाता है। धर्मी धर्म के पथ पर चलते हुए धर्म का फल एवं अधर्मी अधर्म मार्ग पर चलकर अपने ही कर्मों का फल पाता है।

प्रार्थना - हे प्रभु, आपका भय मानते हुए धर्म के पथ पर चलता रहूं।

चेतना

• हाथ कांपना बीमारियों का संकेत है: अगर शीर्षक से आप यह समझ रहे हैं कि यहां कमजोरी के चलते हाथ-पैर कांपने की बात बुजुर्गों की हो रही है तो ऐसा नहीं है। हम यहां कमजोरी, दुबलापन, थकान और ज्यादा चलने के कारण शरीर में आई सुन्नता के चलते हाथ-पैर कांपने की बात कर रहे हैं। हम अपने आसपास कई लोगों को देखते हैं जिन्हें हाथ कांपने की दिक्कत होती है। अकसर लोग समझते हैं कि कमजोरी के कारण उनके हाथ कांपते हैं। लेकिन ऐसा जरूरी नहीं है क्योंकि हाथ कांपने के कई और कारण भी हो सकते हैं। आज हम आपको हाथ कांपने के कुछ कारण बता रहे हैं।

ब्लड प्रेशर के कारण - ब्लड प्रेशर के कारण हाथ-पैर कांपना एक बहुत सामान्य लक्षण है। बीपी बढ़ने या कम होने से शरीर में ब्लड सर्कुलेशन बढ़ जाता है। जिसके कारण हाथ कांपने लगते हैं। इसके अलावा शरीर का ब्लड शुगर लेवल कम हो जाने के कारण स्ट्रेस बढ़ने लगता है, जिसकी वजह से हाथ कांपने की परेशानी शुरू हो जाती है। आपके साथ भी पिछले कुछ समय से ऐसा हो रहा है तो किसी अच्छे डॉक्टर से अपना ब्लड प्रेशर चेक कराएं।

शुगर भी है हाथ कांपने की वजह - शुगर के मरीजों में भी हाथ कांपने का लक्षण देखा जाता है। क्योंकि जब इंसान के शरीर में शुगर कम होने लगता है तो उसमें स्ट्रेस बढ़ जाता है। जिसके चलते हाथ कांपते हैं। अगर आपके भी हाथ कांपते हैं और आपको शुगर नहीं है तो एक बार अपना शुगर टेस्ट जरूर कराएं। हो सकता है शुगर के कारण आपके हाथ कांप रहे हों।

एनिमिया भी हो सकती है वजह - जिन लोगों के शरीर में खून की कमी हो जाती है उन्हें एनिमिया होता है। इस रोग में हाथ कांपना बहुत ही सामान्य लक्षण है। एनिमिया के मरीजों को कमजोरी हो जाती है जिसकी वजह से हाथ कांपते हैं। अगर आपको डर है कि कहीं आप किसी गंभीर रोग की चपेट में ना आए जाएं तो आज सबसे पहले अपना ब्लड लेवल टेस्ट कराएं।

स्ट्रोक - दुनिया में होने वाली सबसे ज्यादा मौतों में स्ट्रोक तीसरे नंबर पर जिम्मेदार है। स्ट्रोक शरीर के किसी भी हिस्से में हो सकता है। हालांकि आमतौर पर स्ट्रोक के मरीजों को चलने में परेशानी, संतुलन की कमी, बोलने में दिक्कत, सिर में अत्यधिक दर्द का होना, शरीर के एक हिस्से में लकवा, अस्पष्ट दृष्टि और हाथ कांपना मुख्य लक्षण है। इसलिए इस बीमारी को हल्के में ना लें। हाथ कांपना स्पष्ट तौर पर स्ट्रोक का निमंत्रण भी हो सकता है।

कॉर्टिसोल हॉर्मोन - बॉडी में कॉर्टिसोल हॉर्मोन के बढ़ जाने के कारण स्ट्रेस लेवल बढ़ने लगता है। इसके साथ ही व्यक्ति में चिड़चिड़ापन, बातों को भूलना और हाथों में कंपन होने लगती है। जिसके कारण ब्लड सर्कुलेशन बिगड़ जाता है और हाथ कांपने लगते हैं।

''प्रार्थना और विश्वास'' दोनों अदृश्य हैं... परन्तु दोनों में इतनी ताकत है कि ''नामुमकिन को मुमकिन'' बना देते हैं...!!!

आत्मिक भोजन

27 जुलाई | **परिश्रम का फल** | **नीतिवचन 14:23,24**

एक आम कहावत है आलसी व्यक्ति को धन की प्राप्ति नहीं होती। एक परिश्रमी व मेहनती इन्सान को उसकी मेहनत का इनाम या लाभ प्राप्त होता है। अत: हम व्यर्थ की बातों को भूलकर मेहनती बनें। जीवन के हर क्षेत्र में प्रभु के हर कार्य को मेहनत एवं लगन से करें। प्रभु में परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता।

प्रार्थना - हे प्रभु, परिश्रमी बनने के लिये सदा ही तत्पर रहूं।

चर्चा परिचर्चा

• **आईएसआईएस ने ली 29 कॉप्टिक ईसाइयों की मौत की जिम्मेदारी, मिस्र का लीबिया में आतंकियों पर हवाई हमला :** आतंकी समूह आईएसआई के हमले में 29 कॉप्टिक ईसाइयों की मौत की प्रतिक्रिया में मिस्र की सेना ने शनिवार (27 मई) को लीबिया में आतंकी समूहों पर हवाई हमले किये। इसके साथ ही मिस्र के राष्ट्रपति अब्दुल फतह अल-सीसी ने कहा कि उनका देश आतंकवादियों को पनाह देने या उन्हें प्रशिक्षित करने वाले किसी भी शिविर पर हमला करने से नहीं हिचकेगा।

मिस्र की सेना ने एक बयान में कहा कि वायुसेना के पायलटों ने पड़ोसी देश में आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों पर हवाई हमले किए और अपना काम सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद वापस लौट आए। मिस्र की सेना के प्रवक्ता तामीर-अल-राफे ने फेसबुक एवं ट्विटर के अपने आधिकारिक पेज पर एक विडियो पोस्ट किया, जिसमें सेना के विमान उड़ान भरते नजर आ रहे हैं।

सरकारी टीवी चैनल के अनुसार 'लीबिया में आतंकी शिविरों' पर छह हवाई हमले किए गए हैं। लीबिया के पूर्वी शहर डेरना में जिहादियों के प्रशिक्षण शिविर इसका निशाना बने हैं। ईसाइयों पर हुए हमले में आतंकियों का हाथ होने की जानकारी मिलने के बाद सेना ने यह हवाई हमले किए। शुक्रवार (26 मई) को हुए हमले में 29 ईसाइयों की मौत हो गई थी और 20 से ज्यादा लोग घायल हो गए थे।

इस बीच आतंकी समूह आईएसआईएस ने ईसाइयों पर हमले की जिम्मेदारी ली है। मिस्र में अल्पसंख्यक समुदाय पर पिछले दो महीने में यह दूसरा हमला है। सीसी ने अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को सीधे तौर पर संबोधित करते हुए कहा, 'माननीय, मुझे अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सहयोग से आतंक के खिलाफ युद्ध करने की आपकी क्षमता और इसे प्राथमिकता देने का पूरा विश्वास है।' सीसी ने कहा, 'सभी देश जो आतंकवाद का समर्थन करते हैं उन्हें बिना किसी विनम्रता या सुलह के दंडित किया जाना चाहिए।' ट्रंप ने हमले की निंदा करते हुए उसे 'बर्बर कत्लेआम' करार दिया था।

ट्रंप ने कहा था कि 'अपने मित्रों, सहयोगियों और साझेदारों को स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि पश्चिम एशिया के ऐतिहासिक ईसाई समुदाय की रक्षा होनी चाहिए।' उन्होंने एक बयान में कहा, 'ईसाइयों को निशाना बनाकर किए जाने वाले रक्तपात पर विराम लगना चाहिए और हत्यारों को हर हाल में सजा मिलनी चाहिए।' सीसी ने अपने बयान में कहा, 'अगर मिस्र का पतन होता है तो पूरे विश्व में अराजकता आ जाएगी' उन्होंने कहा, 'हम विश्व की ओर से युद्ध लड़ रहे हैं' सीसी ने कहा कि हाल में किए हमलों का उद्देश्य लोगों में यह गलतफहमी पैदा करना है कि ईसाई मिस्र में सुरक्षित नहीं है और सरकार भी उनकी रक्षा नहीं कर रही है।

• **काइरो :** मिस्र में ईसाई समुदाय पर बड़ा हमला किया गया है। नकाबपोश अज्ञात बंदूकधारियों ने ईसाइयों को ले जा रही दो बस और एक ट्रक को बीच रास्ते रोक कर उन पर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। इस हमले में 26 लोगों की मौत हो गई, जबकि 25 अन्य घायल हैं। अभी तक किसी आतंकी संगठन ने इसकी जिम्मेदारी नहीं ली है। राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सीसी ने हमले की आलोचना की है। यह घटना मिनया प्रांत की है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक ईसाई समुदाय के लोग समुदाय के धर्मगुरु संत सैमुअल के आश्रम जा रहे थे। उसी वक्त तीन वाहनों से आए अज्ञात हमलावरों ने उनके वाहन रोक लिये। जब तक लोग समझ पाते आतंकियों ने गोलियां बरसानी शुरू कर दीं। सुरक्षाकर्मियों ने हमलावरों की तलाश में अभियान छेड़ दिया है। गश्त बढ़ाने के साथ जगह-जगह नाके लगाए गए हैं। यह कोई पहला मौका नहीं जब ईसाई समुदाय को निशाना बनाया गया है। दिसंबर में भी सुमदाय पर सिलसिलेवार हमले किए गए थे।इनमें समुदाय के 70 लोगों की हत्या कर दी गई थी। मिस्र की कुल आबादी में ईसाइयों की दस फीसदी हिस्सेदारी है। देश में उथल-पुथल शुरू होने के बाद से ही इस समुदाय को निशाना बनाया जा रहा है।

आत्मिक भोजन

28 जुलाई — **एक ही समय** — **1 यूहन्ना 2:15**

आमतौर पर एक आदमी एक समय या एक ही वक्त में दो कार्य नहीं कर सकता। अत: प्रस्तुत वचन के आधार पर हम परमेश्वर से और सांसारिक चीजों से एक साथ प्रेम नहीं कर सकते। शायद ऐसा करके हम दुचिता व्यक्ति बन सकते हैं। संसार से प्रेम ना करने की मनाही से लेखक का तात्पर्य अंधकार के राज्य से है, लालच, भोग विलास की लालसा और उनके अभिमान से है।

प्रार्थना – हे प्रभु, आपसे ही सदा प्रेम करता रहूं।

बाइबल प्रश्न मंच

जुलाई 2017

प्रिय पाठको,

बाइबल के पुराने और नये नियम की पुस्तकों पर आधारित दस प्रश्न आप के सामने प्रस्तुत किये जा रहे हैं। प्रार्थना के साथ नीचे दिये गये पुस्तकों का गहन अध्ययन करें और प्रश्नों का उत्तर, दिये गये नियमों का पालन करते हुए, निर्धारित अन्तिम तिथि तक हमारे कार्यालय में भेज दें। अन्तिम तिथि के बाद मिलनेवाली प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

अगर आपके पास बाइबल प्रश्न मंच से संबंधित कोई सुझाव है तो बिना संकोच हमें अपने सुझाव लिख भेजें।

नियम

- ❖ यह बाइबल प्रश्न मंच सभी आयु वर्ग के लिए है।
- ❖ आपके उत्तर हमें 5 अगस्त 2017 तक प्राप्त हो जाने चाहिए।
- ❖ प्रश्नों के सर्वशुद्ध हल और विजेताओं की सूची सितम्बर 2017 अंक में प्रकाशित होगी।
- ❖ पाठकों की सुविधा के लिए इस अंक में उत्पत्ति और व्यवस्थाविवरण से प्रश्न पूछे गए हैं।
- ❖ **मसीही आह्वान** कार्यालय द्वारा निर्धारित उत्तरों के आधार पर ही उत्तरों की जांच की जाएगी।
- ❖ उत्तर ई–मेल / पोस्टकार्ड / अन्तर्देशीय पत्र / लिफाफा में भेज सकते हैं।

1. **हनोक किस अवस्था में उठा लिया गया था?**
2. **आदम और हव्वा ने सर्वप्रथम किस पत्ते से लंगोट बनायी?**
3. **पशु–पक्षियों को इकट्ठा करने के लिए परमेश्वर ने नूह को कितने दिन का समय दिया?**
4. **जल प्रलय समय नूह कितने वर्ष का था?**
5. **सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा और एक ही बोली थी, उस समय लोग किस देश में जाकर बस गए?**
6. **इब्राहीम का क्या अर्थ है?**
7. **यहोवा ने सदोम और अमोरा में आकाश से क्या–क्या बरसाया?**
8. **परमेश्वर ने इस्राएलियों को किस चट्टान में से पानी पिलाया?**
9. **अबीब महीने में फसह का पर्व मनाया जाता था क्यों?**
10. **किस नाले के पास पहुंचकर इस्राएलियों ने कनान का भेद लिया?**

आत्मिक भोजन

29 जुलाई **आज्ञापालन** **रोमियों 13:1–4**

वचन के इन पदों के द्वारा संत पौलूस हमें यह शिक्षा देते हैं कि शासकीय अधिकारियों का सम्मान करें और उनकी आज्ञाओं का पालन करें। हम डर से यह कार्य ना करें लेकिन विवेकपूर्ण दृष्टिकोण के कारण उनका आज्ञा पालन करें। संत का तात्पर्य यह है कि परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम के कारण हम अपने शासकों के प्रति आज्ञाकारी बनें। हम कर चुकाने के द्वारा उन्हें परमेश्वर का कार्य करने में मदद करते हैं।

प्रार्थना – प्रभु शासकीय आदेशों का पालन आदरयुक्त भय, प्रेम और निष्ठा से करूं।

मई 2017 का सर्वशुद्ध हल एवं विजेता सूची

सही उत्तर :

1. कोरहा, दातान और अबीराम (गिनती 16:32,33)
2. आर्नोन (गिनती 21:13)
3. फसह के वर्ष (गिनती 9:5)
4. मिद्यानियों से (गिनती 31:6,7)
5. तीन (गिनती 24:10)
6. एलीम (गिनती 33:9)
7. परमेश्वर ने नीनवे नगर को नाश नहीं किया (योना 3:10)
8. रेंड़ (योना 4:6)
9. आमोन (सपन्याह 1:1)
10. उखाड़ (सपन्याह 2:4)

सफल प्रतियोगी :-

1) ओलिभर मिंज, हटिया, रांची (झारखण्ड)
2) श्रीमती चंदरा सींह, चम्पारण (बिहार)
3) अलबर्ट चंदू, छतरपुर (म.प्र)
4) हीरामणि बड़ा, रांची (झारखण्ड)
5) सुसन्ना किस्कू, बीरभूम (प. बंगाल)

एक भूलवाले प्रतियोगी :-

1. श्रीमती फ्लोरा बालमुचू, प. सिंहभूम (झारखण्ड)
2. प्रीति आदर्श बेन, नागपुर (महाराष्ट्र)
3. एस्थर एक्का, कडरु, रांची (झारखण्ड)

दो भूलवाले प्रतियोगी :-

1. श्री बिश्व रंजन महन्ती, जमशेदपुर (झारखण्ड)
2. श्रीमती सुशीला मिंज, राऊरकेला (उड़ीसा)
3. श्री प्रमोद मिंज, राऊरकेला (उड़ीसा)
4. राजू देशवाली, मोराबादी, रांची (झारखण्ड)
5. आशावती एक्का, लोहरदगा (झारखण्ड)
6. श्रीमती आईभी गुड़िया, हटिया (झारखण्ड)

सूचना

प्रिय पाठक,

आपको सूचित किया जाता है कि बाइबल-प्रश्न से संबंधित उत्तर हमें निश्चित किए गए तिथि के आधार पर ही भेजने की कोशिश करें।

अन्यथा बाद में प्राप्त उत्तरों को हम सर्वशुद्ध हल एवं विजेता सूची में शामिल नहीं कर पायेंगे।

धन्यवाद !

कार्यकारिणी समिति
मसीही आह्वान

आत्मिक भोजन

30 जुलाई **विश्वास की जांच** **याकूब 1:1-3**

सांसारिक जीवन में व्यक्ति किसी ना किसी रूप में परीक्षाओं से गुजरता है। कुछ घबरा जाते हैं, कुछ इसका सामना करने में समर्थ और सक्षम होते हैं और कुछ इसमें गिर भी जाते हैं। यह आमतौर पर होनेवाली बात है, लेकिन प्रभु में एक विश्वासी के लिये परीक्षा उसके आनन्द का कारण होती है। यह उसके मसीही विश्वास को और दृढ़ता और मजबूती प्रदान करती है।

प्रार्थना - हे प्रभु, परीक्षाओं को आनन्द की बात समूझं ताकि मुझमें और धैर्य उत्पन्न हो।

अवकाशकालीन बाइबल पाठशाला में 'गुड बुक्स एजुकेशनल ट्रस्ट' का योगदान

गर्मी की छुट्टियों में विभिन्न कलीसियाओं के द्वारा 'अवकाशकालीन बाइबल पाठशाला' का आयोजन किया जाता है। VBS में 50-800 बच्चों को बाइबल की शिक्षा दी जाती है।

बीते 40 वर्षों से 'गुड बुक्स एजुकेशनल ट्रस्ट' अवकाशकालीन बाइबल पाठशाला में अपना योगदान देता आ रहा है। वर्ष 2017 में गुड बुक्स ने निम्नलिखित क्षेत्रों में अपना योगदान दिया:-

I. VBS शिक्षक प्रशिक्षण - VBS शिक्षक प्रशिक्षण के लिए 'गुड बुक्स एजुकेशनल ट्रस्ट' को जी.ई.एल. चर्च, राऊरकेला (उड़ीसा), सी. एन.आई. डोरण्डा, सी.एन.आई., रांची और जी.ई.एल. चर्च रांची में आमंत्रित किया गया। इस प्रशिक्षण में उन्हें निम्नलिखित मुख्य बिन्दुओं को बच्चों के जीवन में व्यावहारिक रूप से लागू करने के विषय में बताया गया:-

1. **परमेश्वर के साथ संबंध**
2. **बाइबल का महत्व**
3. **प्रार्थना**
4. **कलीसिया के प्रति हमारा उत्तरदायित्व**

उन्हें VBS के उद्देश्यों के बारे में बताया गया ताकि शिक्षक बच्चों को बालकपन से ही परमेश्वर के वचन में स्थिर रहने के लिए न केवल किताब द्वारा बल्कि गीत, Action Song, Painting, रोचक कहानियों एवं गवाहियों द्वारा अच्छी तरह समझा सकें ताकि जीवन के हर पल में परमेश्वर के प्रति वे दृढ़ विश्वासी बने रहें। इनमें कई शिक्षक ऐसे थे जिनका VBS में पढ़ाने का यह प्रथम अवसर था। VBS के दौरान आने वाली दिक्कतों को हल करने के विषय में उन्हें उपयोगी सलाह दिये गये।

II. सम्पूर्ण VBS कोर्स (पुस्तकें) और प्रमाण-पत्र उपलब्ध कराना : गुड बुक्स संस्था VBS में पढ़ाने के लिए शिक्षकों और छात्रों के लिए के. जी. (K.G.) से लेकर कक्षा दस (X) तक पुस्तकें उपलब्ध कराती रही है। साथ ही शिक्षकों की सहायता के लिए प्रत्येक कक्षा के लिए शिक्षक निर्देश पुस्तिका भी प्रदान की जाती है। वर्ष 2017 में सी.एन.आई. चर्च, डोरण्डा, रांची, जी.ई.एल. चर्च, रांची, हेसाग, कोकर, जमशेदपुर और बोकारो में पुस्तकें उपलब्ध कराई गईं। अन्य राज्यों उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, बिहार और छत्तीसगढ़ में मांग के अनुसार छात्र पुस्तक, शिक्षक पुस्तक एवं प्रमाण-पत्र उपलब्ध कराया गया। VBS का सिलेबस ऐसा बनाया गया है ताकि के.जी. (K.G.) से दसवीं (X) तक पढ़ने वाले विद्यार्थी का सम्पूर्ण बाइबल अध्ययन हो जाए।

III. प्रातः कालीन आराधना में अगुवाई : प्रातः कालीन आराधना में अगुवाई के लिए आमंत्रण पत्र के आधार पर गुड बुक्स प्रतिनिधि वहां उपस्थित होकर प्रातः कालीन आराधना में अगुवाई करते हैं। 25 मई को जी.ई.एल. चर्च, रांची तथा 26 मई को सी.एन.आई. चर्च, रांची में गुड बुक्स प्रतिनिधि द्वारा प्रातः कालीन आराधना में अगुवाई की गई।

IV. सहयोग राशि द्वारा योगदान : बच्चों के सर्वमुखी विकास के लिए VBS में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है जिसमें प्रत्येक विजयी प्रतिभागी को पुरस्कार दिया जाता है। प्रत्येक दिन बच्चों को नाश्ता तथा शरबत प्रदान किया जाता है। अतः VBS में कई तरह के खर्चे होते हैं जिसे ध्यान में रखते हुए गुड बुक्स एजुकेशनल ट्रस्ट द्वारा सी.एन.आई. चर्च रांची, डोरण्डा तथा जी.ई.एल. चर्च, रांची को सहयोग राशि प्रदान की गई।

V. मसीही आह्वान पत्रिका में प्रकाशन : VBS में विभिन्न प्रतियोगिता होती है। इन प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ निबंध और कहानी को मसीही आह्वान पत्रिका में स्थान दिया जाता है। साथ ही विभिन्न जगहों में चलाए गए VBS शिक्षक प्रशिक्षण का रिपोर्ट तथा VBS रिपोर्ट प्रकाशित किया जाता है।

VI. उद्घाटन एवं समापन समारोह में उपस्थिति : आमंत्रण पत्र के अनुसार गुड बुक्स एजुकेशनल ट्रस्ट के प्रतिनिधि उद्घाटन एवं समापन समारोह में अपनी उपस्थिति देकर योगदान देते हैं।

VII. रिकॉर्डिंग में उपयोग : गुड बुक्स एजुकेशनल ट्रस्ट में साउंड रिकॉर्डिंग स्टूडियो है इसमें रेडियो संदेश, विज्ञापन, स्वास्थ्य, सामाजिक मुद्दों और विभिन्न जानकारी संबंधी कार्यक्रम एवं गीतों की रिकॉर्डिंग की जाती है। इन सब कार्यक्रमों में भाग लेने लिए VBS के युवाओं को भी अवसर दिया जाता है।

यह संस्था इस प्रकार से विभिन्न कलीसियाओं द्वारा चलाए जा रहे अवकाशकालीन बाइबल पाठशाला (VBS) में अपना योगदान देकर VBS को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आत्मिक भोजन

31 जुलाई **अवसर की कद्र** **इफिसियों 5:16**

आज संसार में जितने भी वरदान विधाता ने मनुष्य को दिये हैं उनमें समय का वरदान सबसे बहुमूल्य है। यदि हम अवसर का सदुपयोग करते हैं, तो हम बुद्धिमान हैं और यदि हम इसे गवां देते हैं तो हम मूर्ख हैं। आज के वचन के प्रकाश में जरूरी है कि हम समय के महत्व को समझें और इसकी कद्र करें।

प्रार्थना - प्रभु, समय या अवसर के मूल्य को कभी कम ना आकूं।

अवकाश–कालीन बाइबल पाठशाला

जी.ई.एल. चर्च, राउरकेला, उड़ीसा

सी.एन.आई. रांची

जी.ई.एल. चर्च, रांची

सी.एन.आई. डोरण्डा, रांची

Date of Publication : 20th of the previous month
Postal Due Date : 21/22 of the previous month

Postal Reg. No. RN/012/2016-18
RNI Reg. No. JHAHIN/2011/41181

मन की शांति के लिए रेडियो कार्यक्रम सुने

आप हमारे वेबसाइट पर भी कार्यक्रम सुन सकते हैं www.gbetministries.org

क्र.सं.	भाषा	कार्यक्रम का नाम	समय (IST)	दिन	मीटर बैण्ड
1.	Dzongkha	Rewa Ghie Tsik	Evening 6:00-6:15	Sat & Sun	SW 25
2.	डोगरी	प्रेमे कन्ने	शाम 7:15-7:30	सोम से शुक्र	SW 25
3.	कश्मीरी	नूर अगूर	शाम 7:15-7:30	शनि एवं रवि	SW 25
4.	गढ़वाली	आशा कू रैबार	शाम 7:30-7:45	सोम से शुक्र	SW 25
5.	हिन्दी	महिमा के वचन	शाम 7:30-8:00	शनि एवं रवि	SW 25
6.	हिन्दी	आशा की किरण	शाम 7:45-8:00	सोम से शुक्र	SW 25
7.	हिन्दी	आशा दीप	शाम 8:00-8:15	सोम से शुक्र	SW 25

क्या आप अपने जीवन से निराश हैं? परेशानियों के बोझ से दबे हैं? जीवन में अकेलापन महसूस करते हैं? सच्ची शांति की तलाश में हैं?

तो विजयी एवं आनन्दित जीवन जीने के लिए आशा और शांति से भरपूर रेडियो कार्यक्रम अवश्य सुने। इसके साथ ही स्वास्थ्य, सामान्य विज्ञान एवं पर्यावरण संबंधी जानकारियाँ भी प्राप्त करें।

डाक-बाइबल पाठ्यक्रम
(BIBLE CORRESPONDENCE COURSE)

यदि आप परमेश्वर के वचन एवं बाइबल से संबंधित ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक हैं, तो हम से शीघ्र सम्पर्क करें। हमारे यहां नि:शुल्क डाक-बाइबल पाठ्यक्रम की व्यवस्था है, जिसके अध्ययन से आप को आत्मिक लाभ अवश्य होगा। सम्पूर्ण पाठ्यक्रम (भाग-1) सात पाठों में विभाजित है, जिसे पूरा करने पर हम आप को एक प्रमाण पत्र भी प्रदान करेंगे।

यह पाठ्यक्रम सब के लिए उपलब्ध है। मुफ़्त अध्ययन के लिए कृपया शीघ्र इस पते पर हमें लिखें अथवा व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क करें:-

गुड बुक्स एजुकेशनल ट्रस्ट
गुड-बुक्स बिल्डिंग, दूसरी मंजिल
मेन रोड, राँची-834001 (झारखण्ड)

गुड-बुक्स ट्रस्ट एसोसिएशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशित एवं *नीलम सोनाली तिर्की* द्वारा सम्पादित
प्रिन्टवेल, लालजी हिरजी रोड बाई लेन, राँची फोन नं.: 0651-2205802 द्वारा मुद्रित